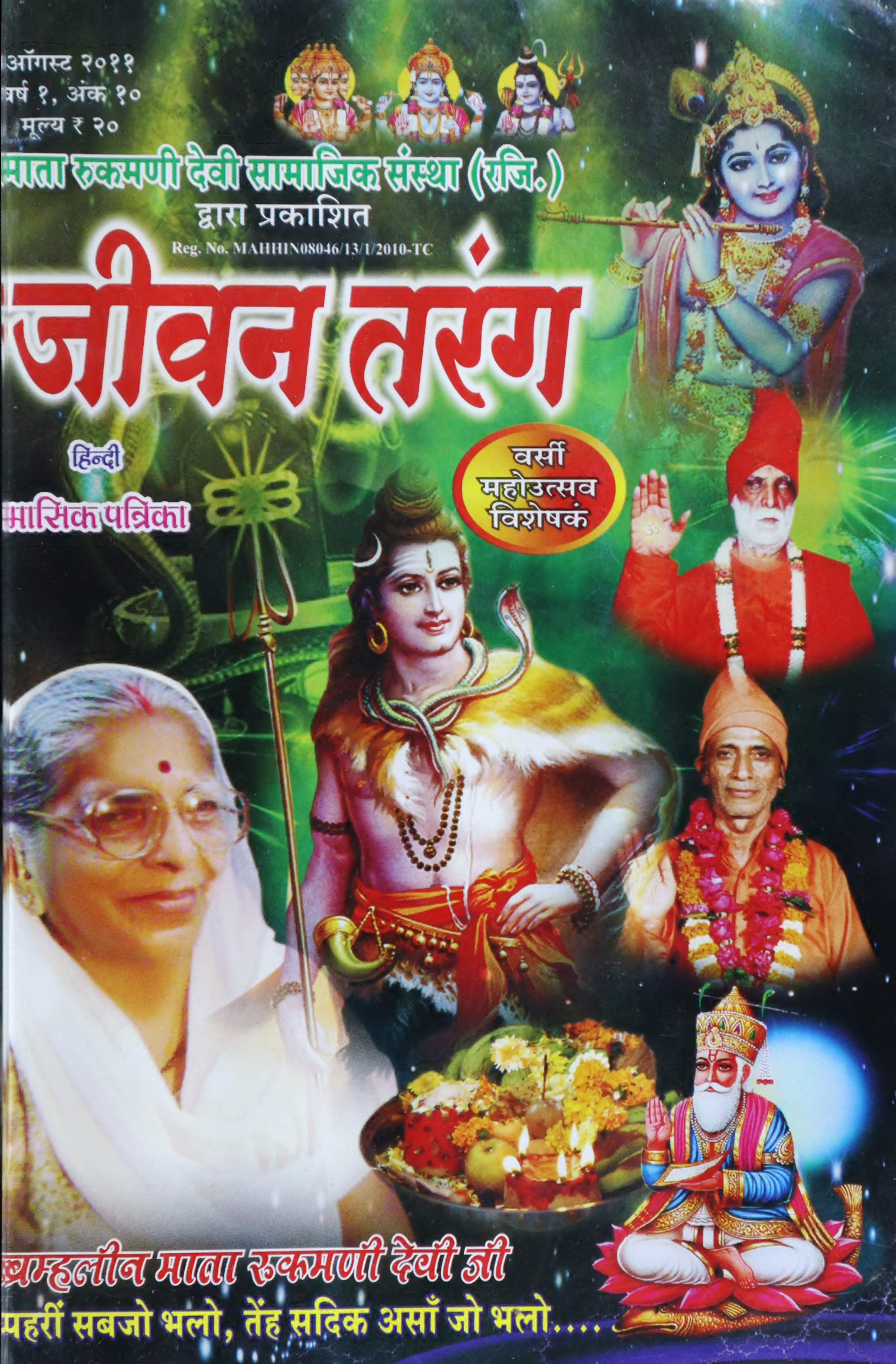

ऑगस्ट २०११
र्ष १, अंक १०
मूल्य ₹ २०
माता रुकमणी देवी सामाजिक संस्था (रजि.)
द्वारा प्रकाशित
Reg. No. MAHHIN08046/13/1/2010-TC
जीवन तरंग
हिन्दी
मासिक पत्रिका
वर्सी महोउत्सव विशेषकं
ब्रम्हलीन माता रुकमणी देवी जी
महरीं सबजो भलो, तेंह सदिक असाँ जो भलो....

# माताजी के महायात्रा की अविर्स्मणीय यादे



# जीवन तरंग

हिंदी भाषा में प्रकाशित **मासिक पत्रिका**

वर्ष : 1 अंक : 10
भाषा : हिंदी मूल्य : 20 रुपये
आगस्ट 2011
Reg No. MAHHIN08046/13/1/2010-TC

स्वामी : माता रुकमणी देवी सामाजिक संस्था
प्रकाशक और मुद्रक : श्री. मेघराजमल डी. रोहरा
प्रकाशन स्थल : माता रुकमणी पॅलेस, बै.नं.२५५, रू.नं.1, झुलेलाल मंदिर के पिछे, उल्हासनगर-421 001. जिला ठाणे (महाराष्ट्र)
**मुद्रण स्थल : साईंकृपा प्रिन्टर्स, मथुरा निवास,** गणेश नगर, ओटी सेक्शन, उल्हासनगर-421 004. जिला ठाणे (महाराष्ट्र)
**संपादक : श्री. दिपक एम. रोहरा.**
**कार्यकारी संपादक : श्री. अशोक फुलंब्रिकर.**

**सदस्य शुल्क (डाक खर्चसहित)**
वार्षिक : रुपये 200/- पंचवार्षिक: रुपये 1000/-
आजीवन : रुपये 2500/-

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशी रजिस्ट्रर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजा करें। इस माध्यम से कोई भी राशी गुम होने पर संस्था की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशी मनिऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट (जीवन तरंग के नाम) भेजने की कृप्या करें।

**संपर्क पता** : माता रुकमणीं पॅलेस, बै.नं.255, रू.नं.1, झुलेलाल मंदिर के पिछे, उल्हासनगर-421 001. जिला ठाणे (महाराष्ट्र)
फोन नं.: (0251) 2712291, 09403940007
Email : jeevantarang_unr@rediffmail.com
jeevantarang_unr@yahoo.in
deepakrohra.m@gmail.com



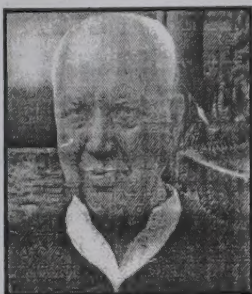
## इस अंक में पढ़ियें...

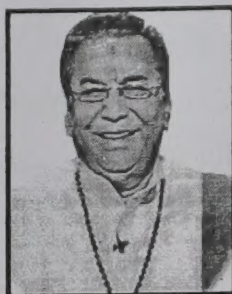

| अ.क्र. | विवरण | पृष्ठ क्र. |
|---|---|---|
| 1) | संपादकीय मंडल | 4 |
| 2) | संपादकीय ..... | 5 |
| 3) | ब्रम्हलीन माता रुकमणी देवीजी की जीवनयात्रा | 6 से 10 |
| 4) | गुरू पूर्णीमा व्यासपूर्णीमा | 11 |
| 5) | पौराणिक कहानियाँ | 12 |
| 6) | इस महिने के त्यौहार, पर्व व व्रत | 13 |
| 7) | दादा रामचंद साहिब का वर्सी महा उत्सव | 14 से 15 |
| 8) | एक यात्रा पुर्नजन्म की ओर.... | 16 |
| 9) | स्वामी टेऊंरामजी वर्सी उत्सव | 17 |
| 10) | आपके S.M.S | 18 |
| 11) | संस्था द्वारा कीये गए कार्य (रंगीन पेज) | 19 से 22 |
| 12) | ज्ञान कीं बातें | 23 |
| 13) | अपके तारे (आर्य गुरूजी द्वारा) | 24 से 25 |
| 14) | वास्तुशास्त्र का ज्ञान | 26 से 27 |
| 15) | हमारा शहर, हमारे संत साईं धर्मदास साहेब | 28 से 31 |
| 16) | व्यक्तिव ऑफ द मन्थ श्री सुरेश (पप्पु कालानी) | 32 |
| 17) | चालिहा साहिब | 33 |
| 18) | अपके पत्र | 34 से 35 |
| 19) | कोनार्क फाउंडेशन का साराहनीय कार्य | 36 |
| 20) | जीवन तरंग के सदस्यों को जन्मदिन की शुभकामनाएँ | 37 |
| 21) | श्रध्दांजली | 38 |

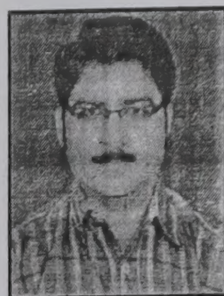

**नोट : अगर आप जीवन तरंग मासिक पत्रिका से जुड़ना चाहते हैं तो, पृष्ठ क्र. ३८ पर दिये हुए सदस्यता फॉर्म भरकर भेजे।**

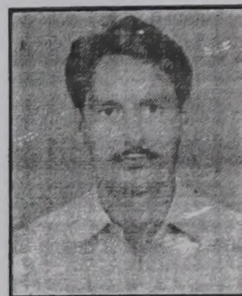
॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥

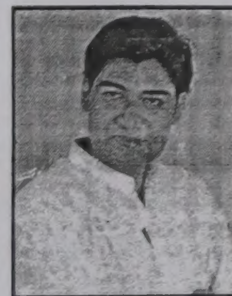
# संपादकीय कार्यकारिणी मंडल

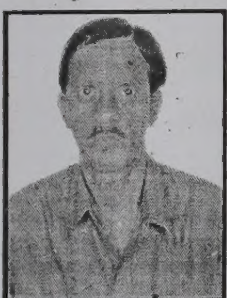

श्री.मेंघराज डी. रोहरा
प्रकाशक/मुद्रक


आचार्य आर्य गरूजी
संरक्षक

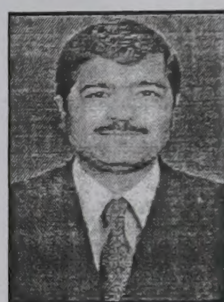

श्री.दिपक एम. रोहरा
प्रधान संपादक

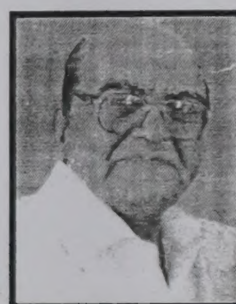

श्री.राजनाथ(पप्पू) गुप्ता
उप संपादक

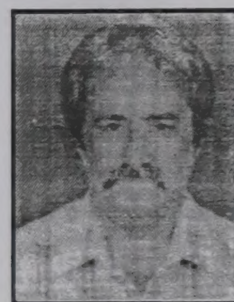

श्री.अनुराग आचार्य
सह संपादक


श्री.अशोक फुलंब्रिकर
कार्यकारी संपादक

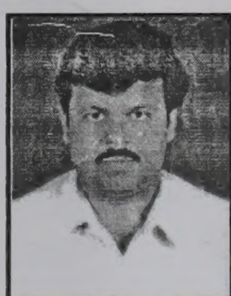

अॅड.नरेश एम. रोहरा
कानूनी सलाहकार

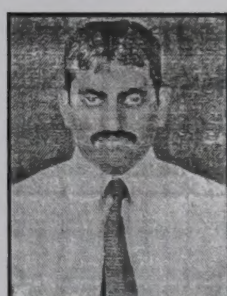

श्री. रामचंद भाटिया
संरक्षक


श्री.रेवानी टेकचंद मस्त
सलाहकार


श्री. लखी चलेछा
छायाचित्र संकलन


श्री.भरत भाटिया(भगत)
संवाददाता

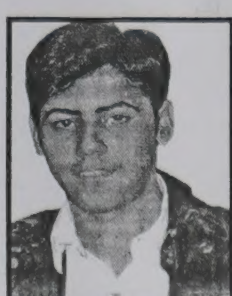

श्री. परमानंद गरेजा
संवाददाता


श्री. प्रकाश तलरेजा
छायाचित्र संकलन

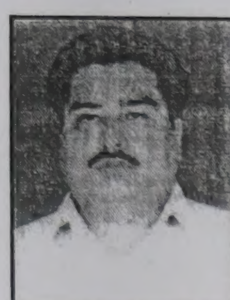

श्री. विजय रहाणे
अंबरनाथ संवाददाता

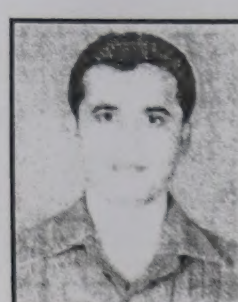

श्री.महेंद्र(राजू)वाधवानी
अहमदाबाद संवाददाता


श्री.कालूराम कुकरेजा
कोटा (राजस्थान)


श्री. हितेश वलेछा
छायाचित्र संकलन


श्री.मोहित छाब्रिया
छायाचित्र संकलन


श्री.जयकुमार नाथानी
संवाददाता


श्री.सुनील (सेमू) विशनानी
मार्केटिंग एडवाईजर
(चीफ ब्यूरो)

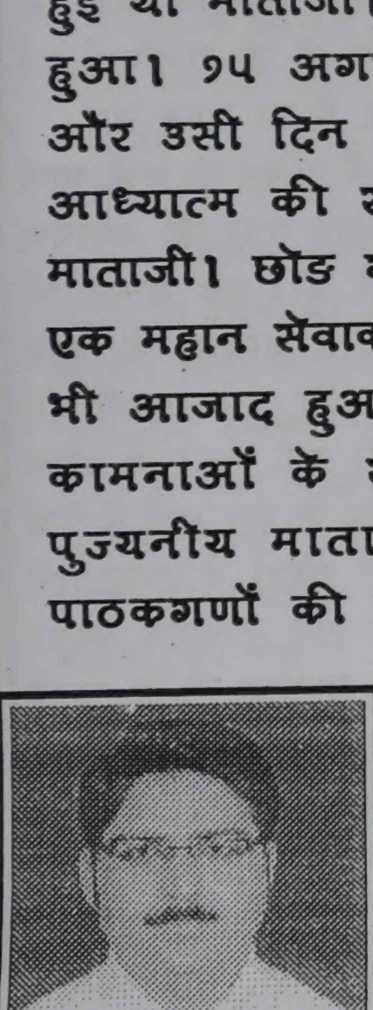
# संपादकीय ...

समस्त पाठकगणों को,

सप्रेम नमस्कार!

अगस्त माह मेरी जिंदगी का कभी ना भूलने वाला महीना है। श्रावण सोमवार के व्रत इसी माह में प्रारंभ किये जाते हैं। भगवान श्री कृष्ण भी इसी माह में अवतिरत हुए थे, इसी वजह से दही हंडी उत्सव मनाया जाता है। चालीहा साहेब चल रहे हैं। झमा-झम बारिश हो रही है, मानो संपूर्ण प्रकृति स्नान कर रही है, नए वस्त्र धारण कर रही है। परम पुज्यनीय माता रुकमणी देवीजी भी इसी महीने अपने आराध्य भगवान शिव शंकर भोलेनाथ के पास प्रस्थान कर गईं थीं। ब्रम्हलीन हुई थीं माताजी। एक महान आत्मा का मिलन परमात्मा से हुआ। १५ अगस्त के दिन श्रावण का तीसरा सोमवार है और उसी दिन माताजी का वर्सी उत्सव भी है। लोगों को आध्यात्म की राह दिखाते-दिखाते स्वयं शिवमय हो गईं माताजी। छोड गईं मानव-जाती के लिए एक महान धरोहर, एक महान सेवाकार्य। १५ अगस्त १९४७ के दिन अपना देश भी आजाद हुआ था। स्वंत्रता दिवस की भी हार्दिक शुभ कामनाओं के साथ मैं यह वर्सी उत्सव विशेषांक अपनी पुज्यनीय माताजी के शुभ आर्शिवाद के साथ समस्त पाठकगणों की सेवा में समर्पित करता हूँ।

ॐ नमः शिवाय



संपादक

दिपक एम. रोहड़ा

# ब्रम्हलीन माता रुकमणी देवीजी की जीवनयात्रा



संतों को किसी परिचय की आवश्यकता नहीं होती। उनका जीवन संदेश ही संपूर्ण विश्व के लिये एक परिचय होता है, जिस पर चलकर प्राणीमात्र को असीम सुख की प्राप्ति होती है। परमपूज्यनीय ब्रम्हलीन माता रुकमणी देवीजी का जीवन चरित्र भी उन्ही की तरह दिव्य है जो आज उनके ब्रम्हलीन होने के पश्चात भी उसी प्रकार कायम है जैसे अंतरिक्ष में आकाशगंगा। इन्सान के जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है, उसका परिवार। वह अपने परिवार के सुख के खातिर दिन-रात मेहनत करता है और उसी में अपना जीवन समर्पण करता है। इन्सान को परिवार की जितनी जरूरतें होती है, उतनी ही जरूरतें समाज को भी होती है। लेकिन समाज की जरूरतें बहुत कम ही लोग पुरा करने की कोशिश करते हैं। जो यह निस्वार्थ भावना से कोशिश करते हैं, उसे समाजसेवक कहते हैं। समाजसेवक का अर्थ है भगवान का दुत।

माताजी का जन्म २ ऑक्टोबर सन १९३९ के दिन तब के अखंड भारत और आज के पाकिस्तान की खैरपुर रियासत में हुआ था। २ ऑक्टोबर को देश के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी का जन्म हुआ था। जिन्होंने सत्य और अहिंसा के राह पर चलकर अंग्रेजों के हुकुमत से देश को आजादी दिलाई। उनके उस महान कार्य को देशवासी आज भी याद करते हैं और आगे सदीयों तक याद करते रहेंगे। इसी २ ऑक्टोबर को जन्मी माता रुकमणी देवीजी ने निस्वार्थ समाजसेवा करके एक बार फिर २ ऑक्टोबर के दिन को महत्वपूर्ण दिन साबित कर दिया। उनका बचपन में पिता के घर नाम था- भागाँ (भागाँ का अर्थ है भाग्यवान)। जन्म-जन्मांतर से पुण्यकर्मों के भाग्य से ही भागाँबाई का मन भगवान शंकर में रम जाता था।

उल्हासनगर में आकर भी नन्ही भागाँ अपने आराध्य भगवान शंकर की आराधना में ही लीन रहती थीं। वह अपनी माँ पिसंदबाई नेभनदास वाधवा के साथ पांडवकालीन शिवमंदिर जाया करती थीं, जो अंबरनाथ में है। सन १९६१ में उनका विवाह अक्षया तृतीय के शुभ मुहुर्त में दादा मेंघराजमल ढोलुमल रोहड़ा से उल्हासनगर में संपन्न हुआ। उन्होंने पुज्यनीय सद्‌गुरु स्वामी शांतिप्रकाश महाराज जी से गुरुमंत्र लिया। अध्यात्म के पथ पर अग्रसर होती गयीं पुज्यनीय माता रुकमणी देवीजी। साईं जीवनघोट साहब, स्वामी सर्वानंदजी महाराज, सद्‌गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज, साईं प्रभारामजी, साईं रुपाराम साहब, साईं वसण शाह दरबार व परमपूज्य संत श्री. आसारामजी बापू का भी गहरा

प्रभाव माता रुकमणी देवीजी पर रहा।

बाल्यावस्था से ही पुज्यनीय माता रुकमणी देवीजी ने १६ सोमवारों का व्रत रखना प्रारंभ कर दिया था। शादी के बाद अपने कुलगुरू (ब्राम्हण) से आज्ञा लेकर ससुराल में भी १६ सोमवारों का व्रत रखना निरंतर जारी रखा और साथ-साथ ही उन्होंने अपने आसपास के रहने वाली महिलाओं को भी १६ सोमवारों का व्रत रखने का प्रोत्साहन दिया तथा इस व्रत की महिमा समझाई। यह व्रत ही उनके जीवन की शक्ति बनी और लगातार ४७ वर्षों तक इसे उन्होंने अपने जीवन के अंतिम साँस तक कायम रखा। लाखों की संख्या में भक्तगण आज भी श्रावण सोमवार (१६ सोमवार) के व्रत रख रहे हैं, ये विरासत है माता रुकमणी देवीजी की जो आज भी चल रही है। यहाँ पूजन-सामग्री भी भक्तों में निःस्वार्थ भावना से दी जाती है।

अध्यात्म सेवा के पथ पर स्वयं ले जाता है। शिव का अर्थ ही है, कल्याण करना। माता रुकमणी देवीजी लोगों के दुःख दर्द देखकर रो पडती थीं, उनके दुःख देखकर भगवान शिव से अपना आँचल (पल्लव) फैलाकर याचना करने लगती थीं। चमत्कार होने लगे। उल्हासनगर सहित संपूर्ण देश में अनुयायी बनने लगे। माता रुकमणी देवी भक्तों की माँ बन गयी। शक्तिस्वरुपा माँ।

माताजी धार्मिक, राष्ट्रभक्त, समाजसुधारक, मार्गदर्शक पशु-पक्षीप्रेमी, एवम् दया, क्षमा, शांति व सादगी की मूर्ती थीं पुज्यनीय माता रुकमणी देवीजी।

माताजी की ख्याती देश-विदेश तक फैलने लगी। भक्तों की मनोकामनायें पूर्ण



होते लगीं, सूनी गोदें भरने लगीं, जरुरतमंदों के आँसू पोंछे जाने लगे।

पूज्यनीय माता रुकमणी देवीजी हर साल हरिद्वार, मथुरा, वृंदावन, बद्रीनाथ, रामेशवरम् जैसे तीर्थक्षेत्रों की यात्रा पर अपने भक्तों के साथ जाया करती थी। अपने भक्तों एवम् रिश्तेदारों से कहा करती थी कि अपने फटे-पुराने कपडे फेंके नहीं बल्कि उन्हें लाकर दें। माताजी उन जमा कपडों को अपने हाथों से सिलकर उन्हें पहनने लायक बनाकर जरूरतमंदो को बांटना शुरू किया। उसमें उन्होंने ना जात देखी न धर्म देखा, सिर्फ इन्सानियत को अपना धर्म समझा। हरिद्वार, मथुरा, वृंदावन, बद्रीनाथ, रामेश्वरम् जैसे तीर्थक्षेत्रों में जाकर ठंड से ठिठुरते गरीब, जरूरतमंदों में कपडे बाँटा करती थी। बद्रीनाथ धार्मिक स्थल हजारों फीट उँचाई होने की वजह से वहां पर कई जरूरी चीजों की कमी अक्सर होती है। फिर वह चाहे कितनी भी छोटी चीज हो जरूरत के वक्त अमूल्य रहती है। उनमें से छोटी लेकिन महत्वपूर्ण जरूरत

सुई और धागा होती है, क्योंकि यह सुई और धागा बड़ी मुश्किल से वहां पर मिलता था। इस जरूरत को ध्यान में रखकर माता रुकमणी देवीजी हर साल शहर से धागे के रिर्ले जमा करके तथा साथ में ढेरों सारी सुईयाँ बद्रीनाथ लेकर जाती थी और यह सुई और धागा वहां के गरीब जरूरतमंदों में मुफ्त बांटती थी। वहां के लोगों के लिए यह सुई और धागा बहुत ही अनमोल साबित होता था। ऐसा ही माता रुकमणी देवीजी हरिद्वार, मथुरा, वृंदावन, रामेश्वरम् जैसे तीर्थ स्थलों में जाकर वहां के गरीब जरूरतमंदों को कपड़ा तथा जरूरत की चीजें बांटती थी तथा भंडारों का आयोजन करके अन्नदान करती थी।



गरीब बच्चे शिक्षा ग्रहण करके सुशिक्षित बनें, इसलिए वह गरीब बच्चों में हर वर्ष किताब, कापी तथा स्कूल के जुनिफॉर्म आदि में मदद करती थीं, तथा कई बच्चों की स्कूल तथा क्लासेस की फीस भरती थी। उनके जीवन में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान था। वह जलसेवा को महत्वपूर्ण मानती थीं। पशू-पक्षियों को, मेहनतमंदों को पानी पिलाना वह ईश्वर सेवा समझती थी। इसलिए उन्होंने हरि ॐ काकाजी का प्याऊ से शुरूवात की तथा कई जगहों पर थंडा पानी मिले, इसलिए मटके रखे थे। कड़ी धूप में सब्जी बेचते हुए महिलाओं एवं पुरुषों को निस्वार्थ रूप से पीने के लिए बोतलों में भरकर ठंडा पेय जल उपलब्ध करवाती थीं पुज्यनीय माताजी। परमपुज्यनीय संत श्री आसारामजी बापू उल्हासनगर आते तो उनके लाखों साधकों के लिए प्रसाद, जल एवं शरबत की व्यवस्था करवाती थीं। पुज्यनीय माताजी की यह सोच थी कि सत्संग रूपी यज्ञ से जब कोई लौटे तो वह प्यासा न रह जाए। उनके निस्वार्थ समाज कार्यों को देखकर उनके पति दादा मेंघराजमल रोहरा ने सामाजिक संस्था गठित करने का संकल्प किया। ताकि शुभ कार्यों को और ज्यादा साथ मिले, तब उन्होंने दिनांक २०/०३/२००७ को गुढीपाडवा तथा चेटीचंड के शुभ महुर्त पर उनके ही नाम से माता रुकमणी देवी सामाजिक संस्था की स्थापना हुई। यह संस्था शहर में कार्य करने लगी। पुज्यनीय माता रुकमणी देवीजी ने अपने जीवन में विविध विषयों की करीबन ४००० से भी ज्यादा पुस्तकें जमा की थी। उन्हीं पुस्तकों का उन्होंने वाचानालय (लायब्रेरी) में रूपांतर किया, जिसका लाभ आज भी कई लोग उठा रहे हैं। पुज्यनीय माता रुकमणी देवीजी हर साल १६ सोमवार का उध्यापन बड़ी श्रद्धा व धूम धाम से करती थी। जिसमें सैकडों श्रद्धालुओं के साथ-साथ शहर व राज्य के कई गणमान्य हस्तियां शामिल होती थीं। इस उध्यापन के अवसर पर प्रसाद और शिवभक्ति की तथा १६ सोमवार के व्रत के महिमा की सी.डी. व डीव्हीडी मुफ्त वितरित करती थी, ताकि समाज में धार्मिक



भावनाओं का उत्थान हो। महिलाओं के उत्थान के लिए वे सदा कार्यरत रही थी।

आज के युग में लोग अपने परिवार को संभाल नहीं पाते हैं, ऐसे कई परिवारों को पुज्यनीय माताजी संभालते हुए सहायता करती थी। हर अमावस को गरीब, जरूरतमंद, असहाय, विधवा, बुर्जुग महिलाओं को वह राशन बांटती थीं। पुज्यनीय माता रुकमणी देवी के समाजकार्यों से प्रभावित होकर अनगिनत लोग जुङते गये।

मैं अकेली ही चली थी,
जानिबे मंजिल मगर।
लोग साथ आते गए
और कारवाँ बनता गया।

सन २००८ में मुंबई स्थित बांद्रा के नॅशनल कॉलेज में वर्ल्ड अॅस्ट्रोलॉजीकल रिसर्च इंस्टीयूट व पुन्नीबाई पमनदास फाऊंडेशन की तरफ से ईटीसी चैनल के प्रसिद्ध आर्य गुरूजी व ब्रम्हकुमारी की दिदीयों के शुभ हार्थो से पुज्यनीय माता रुकमणी देवीजी का शाल तथा श्रीफल देकर तथा अध्यात्म का साफा (पगङी) पहनाकर सन्मानित किया गया।

सामाजिक रिश्ते निभाना तो कोई उनसे सीखे। पुज्यनीय माताजी वह सेतू थी जिन्होंने न सिर्फ अपनी परिवार बल्कि मायके व ससुराल वालों से तो क्या, समस्त समाज के लोगों से निभाया व अपना बनाया और ब्रम्हलीन होने के पश्चात आज भी निभा रहीं हैं। आज भी वे संस्था के द्वारा कार्य कर रहीं हैं। उन्हें पहले मासी, जगत मासी फिर अम्माँजी के नाम से जाना जाने लगा। पुज्यनीय माता रुकमणी देवीजी बङी श्रद्धा से ईश्वर के सामने अपना पल्लव फैलाकर दीन-दुखीयों के लिए मन्नत मांगती थी। उनकी मन्नत में वह शक्ति थी कि, उनके द्वारा मांगी गई हर मन्नत पुरी होती थी, क्योंकि उनके परमवाक्य हैं,

पहरीं सब जो भलो
तहिं सदिके असाँ जो भलो

कई भक्त पुत्र प्राप्ती होने पर मंदिर में घंटियाँ बांधकर जाते थे तथा मन्नतें पूर्ण होने के पश्चात खुशी-खुशी चौमासे में प्रसाद वितरण किया करते हैं।

भगवान श्री कृष्ण को जब उनकी पत्नी रुकमणी ने प्रेम पत्र लिखा था कि वे क्यों उन्हें बिना दिखे प्रेम करती हैं? कैसे उनके सुने हुए गुणों की वजह से उन्हें इतना चाहती हैं इसी वजह से वे उन्हें अपने कुलदेवी मंदिर से हरण कर ले जाएं क्योंकि वे उन्हें अपना सर्वस्व (भगवान) मानती हैं। रुकमणी कहती हैं अगर न भी लेने आए तो मैं हजारों वर्षो तक तपस्या करूंगी, सेवा करूंगी, भाव पैदा करूंगी और खुद को आपके (श्री कृष्ण) योग्य बनाऊंगी ताकि आप मुझे स्वयं लेने आऐं और हुआ भी ऐसा ही माताजी की तपस्या रंग लाई उनके जीव मात्र के लिए किये हुए कल्याण कार्यों को देखकर भगवान श्री कृष्ण स्वयं



जन्माष्टमी के दिन माता रुकमणी देवीजी को हमसे हर के ले गए। दिनांक १४/०८/२००९ का दिन जंन्माष्टमी का दिन था। इस पावन दिवस पर भगवान श्री कृष्ण ने जन्म लिया था। इस दिन पुज्यनीय माता रुकमणी देवी ने पंचामृत से भगवान श्री कृष्ण को दुध और दही से नहलाया था तथा उनका चरणामृत पुरे परिवार को तथा आसपास के आये हुए लोगों को बाँटा। भोंजन करके अपना व्रत छोड़ा। ऐसे लगा कि श्री कृष्ण अपनी चहेती रुकमणी को लेने आये हों। मानो उन्हें शिवलिन होने का जैसे अहसास हो गया था, इसलिए उन्होंने सिरदर्द की बात कहकर अपने बेटे, बेटियों और दामादों को बुलवाया और बिना किसी तकलीफ के, डॉक्टरों के पैसे खर्च किये बिना अपने छोटे सुपुत्र नरेश तथा बेटी सुनिता की गोदी में सिर रखकर ॐ नमः शिवाय। ॐ नमः शिवाय।। का जाप करते हुए अपने शरीर को त्याग दिया और शिवलीन हो गई। ना कोई सुई, न दवाई, न कोई तकलीफ.... उन्होंने अपनी जीवन यात्रा पूर्ण की। उनके देह त्याग ने के बाद और शिवलीन होनें के बाद उनके पती, बहु और बेटीयों ने उन्हें सुहागन की तरह सजाकर ओम नमो भगवतें। वासुदेवाय नमः। के मंत्र उच्चारण के साथ विधिवत अंतिम विदाई दी। दि. १५/०८/२००९ को उनकें अंतिम यात्रा के लिए डोली सजाई गई थी और उस डोली के साथ उनका अनंतपथ का सफर शुरू हो गया। इस अंतिम यात्रा पर विदा करने के लिए उनके परिवार के साथ-साथ हजारों साधक उनके साथ शामिल थे।

क्या इसे सिर्फ संयोग ही कहें या माताजी का अपने सद्‌गुरू के प्रति प्यार कि आज से १७ वर्ष पूर्व उनके सद्‌गुरू स्वामी शांती प्रकाशजी महाराज ने भी १५ अगस्त १९९२ को ही अपने देह को त्याग कर जीवनलीला समाप्त की थी। ठीक उसी तरह १५ अगस्त को ही माताजी के शरीर को मुखअग्निी दी गई। श्रवण का महिना तथा चौमासे के व्रत, जिनकी उपसाक माता स्वयं थी। ऋषि-मुनी, साधू-संत भी इसलिए तपस्या तथा उपासना करते हैं कि अंत सहाई हो। अब इससे ज्यादा अंत क्या सहाई होगा कि गणपति व भगवान झूलेलाल चालिया साहब के दिन जहां लोग अर्थी को कांधा देने के लिए उमङ पङे थे। राम नाम संग हैं, भोलेनाथ संग हैं के जयजयकारों के साथ उनकी डोली उठाई गई। पुज्यनीय माता रुकमणी देवी आज इस संसार में नहीं हैं। लेकिन भक्तों के जीवन में हो रहे निरंतर चमत्कार उनके हमारे बीच की उपस्थिती को दर्शाते हैं। उनके विचार आज भी जीवित है। अब उनके कार्यों को अपने स्वर्गिय माता रुकमणी देवीजी के शक्ति से उनके बेटे, बेटियां तथा बहू निरंतर कर रहे है और भविष्य में भी करते रहेंगे।

यह गंगा है अध्यात्म की,<br>
यह गंगा है सेवा-भाव की,<br>
यूं ही बहती रहेगी एवम् भक्तों की<br>
समस्त मनोकामनायें पूर्ण करती रहेगी।<br>
ॐ नमः शिवाय!

# गुरू पूर्णीमा (व्यासपूर्णीमा अर्थात गुरू पुर्णीमा)



गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वर।
गुरुर्साक्षात्परब्रह्मा तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

गुरू पुर्णीमा गुरू व शिष्य के प्रेम व पवित्र संबंध का प्रतिक है। शिष्य को चाहिए सदा गुरूदेव की सेवा कर अपने गुरूदेव के अनमोल वचनों का अपने जीवन में अमल कर सदा गुरू में अटूट श्रृध्दा व निष्ठा होनी चहिए। गुरू पुर्णीमा जैसे महापर्व पर शिष्य को चाहिए प्रातः काल निद्रा से उठकर सर्वोप्रथम अपने गुरूदेव या उनके चित्र के दर्शन करने चाहिए। तत्पशचात गुरूदेव की पूजा अर्चना करनी चाहिए। समूरे भारत के प्रत्येक क्षेत्र में गुरू पुर्णीमा महापर्व मनाया जाता है, इस महापर्व पर प्रत्येक शिष्य जहां उनके गुरूदेव का आस्थान हो दर्शन हेतू पहुंच जाते हैं।

उल्हासनगर शहर में भी लाखों की संख्या में भक्तों ने गुरू पुर्णीमा महापर्व बड़े धूम धाम व हर्षोलास से मनाया। गुरू पुर्णीमा के उपलक्ष में कई महान संत उल्हासनगर में अपने शिष्यों को दर्शन देने हेतू व प्रवचनों की वर्खा करने आ पधारे। उल्हासनगर के सभी गुरू भाई-बहनों ने अपने-अपने गुरूदेवों के दर्शन कर अपने जीवन सार्थक व भड़भागी बना दीया। जिन में परम पूज्य संत श्री आसारामजी बापू गुरू पुर्णीमा से ५ दिन पहले उल्हासनगर में पधारकर सभी अनुयाईयों को दर्शन देकर उनका कल्याण कर गए। इसी प्रकार कई संतों ने उल्हासनगर में आकर अपने भक्तों को दर्शन दीये तो कई संतों द्वारा स्थित आश्रमों में गुरू पुर्णीमा के उपलक्ष में विशेष कार्यक्रम रखे गये। जैसे जय बाबा जी के निजधाम आश्रम में स्वामी विशनदासजी महाराज की अध्यक्षता में गुरू पुर्णीमा के उपलक्ष में एक महा कार्यक्रम रखा गया। जिस में विशेष रूप से भगवत साप्ताहिक महा ज्ञान रखा गया था। इस महा कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे यह कार्यक्रम दिः ६/७/२०११ से १५/७/२०११ तक आयोजित किया गया था। जिनमें आदरणीय पंडित गोपाल प्रसाद जोशी (मथुरा वाले) जी ने व्यास पूजा का महत्व भक्तों को समझाया व ज्ञान गंगा दीदी द्वारा माता की ज्योत की गई, प्रकाश भगत मंडली द्वारा संगीतमय कार्यक्रम रखा गया। जय बाबा मंडली के भाई रूपचंद जी व भाई लखमीचंद जी (सूरत वाले) का रंगा रंग कार्यक्रम रखा गया। गुरू पुर्णीमा के दिन सत्संग करने के पश्चात मधुर भजन गाये गये, महायज्ञ पूरा होने पश्चात कार्यक्रम की पूर्णावती की गई। इस प्रकार जुदा-जुदा संतों के विभिन्न आश्रमों में गुरू पुर्णीमा महापर्व मनाया गया।

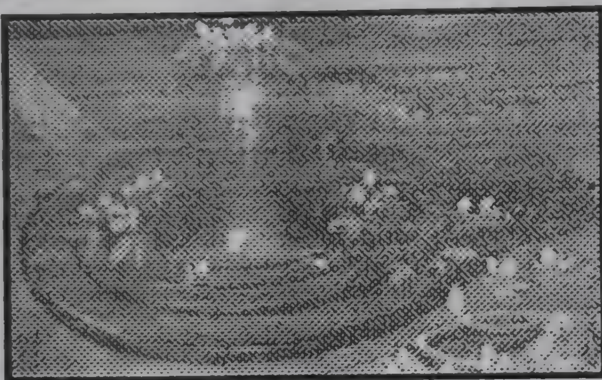
# पौराणिक कहानियाँ



ॐ नमः शिवाय!

## १०. श्री. नागेश्वर ज्योर्तिलिंग





भगवान शिव का यह प्रसिद्ध ज्योर्तिलिंग गुजरात प्रान्त में द्वारकापुरी से लगभग १६ मील की दूरी पर स्थित है।

इस ज्योर्तिलिंग के संबन्ध में पुराणो में यह कथा दी हुई है– सुप्रिय नामक एक बडा धर्मात्मा और सदाचारी वैश्य था। वह भगवान शिव का अनन्य भक्त था। वह निरंतर उनके आराधना, पूजन और ध्यान में तल्लीन रहता था। अपने सारे कार्य वह भगवान शिव को अर्पित करके करता था। मन, वचन, कर्म से वह पुर्णतः शिवार्चन में ही तल्लीन रहता था। उसकी इस शिवभक्ति से दारूक नामक एक राक्षस बहुत क्रुद्ध रहता था। उसे भगवान शिव की यह पूजा किसी प्रकार भी अच्छी नहीं लगती थी। वह निरंतर इस बात का प्रयत्न किया करता था कि उस सुप्रिय की पूजा–अर्चना में विघ्न पहुँचे। एक बार सुप्रिय नौका पर सवार होकर कहीं जा रह था। उस दृष्ट राक्षस दारूक ने यह उपयुक्त अवसर देखकर उस नौका पर आक्रमण कर दिया। उस नौका में सवार सभी यात्रियों को पकङकर अपनी राजधानी में ले जाकर कैद कर दिया। सुप्रिय कारागार में भी अपने नित्यनियम के अनुसार भगवान शिव की पूजा–आराधना करने लगा। अन्य बंदी यात्रियों को भी वह शिवभक्ति की प्रेरणा देने लगा। दारूक ने जब अपने सेवकों से सुप्रिया के विषय में यह समाचार सुना, तब वह अत्यंत क्रुद्ध होकर उस कारगार में आ पहुँचा। सुप्रिया उस समय भगवान शिव के चरणों में ध्यान लगाये हुए दोनों आँखें बंद किये बैठा था। उस राक्षस ने उसकी यह मुद्रा देखकर अत्यंत भीषण स्वर में उसे डाँटते हुए कहा– अरे दुष्ट वैश्य! तू आँखें बंदकर इस समय यहाँ कौन–से उपद्रव और षडयन्त्र करने की बातें सोच रहा है? उसके यह कहने पर भी धर्मात्मा शिवभक्त सुप्रिय वैश्य की समाधि भंग नहीं हुई। अब तो वह दारूण नामक महाभयानक राक्षस क्रोध से एकदम बावला हो उठा। उसने तत्काल अपने अनुचर राक्षसों को सुप्रिय वैश्य तथा अन्य सभी बन्दियों को मार डालने का आदेश दे दिया। सुप्रिय उसके इस आदेश से जरा भी विचलित और भयभीत नहीं हुआ। वह एकनिष्ठ भाव और एकाग्र मन से अपनी और अन्य बन्दियों की मुक्ति के लिये भगवान शिव जी को पुकारने लगा। उसे यह पूर्ण विश्वास था कि मेरे आराध्य भगवान शिव जी इस विपत्ति से मुझे अवश्य ही छुटकारा दिलायेंगे। उसकी प्रार्थना सुनकर भगवान शंकर जी तत्क्षण उस कारागार में एक उँचे स्थान में प्रकट हो गये। उन्होंने इस प्रकार सुप्रिय को

दर्शन देकर उसे अपना पाशुपत-अस्त्र भी प्रदान किया। उस अस्त्र से राक्षस दारूक तथा उसके सहायकों का वध करके सुप्रिय शिवधाम को चला गया। भगवान शिव के आदेशनुसार ही इस ज्योर्तिलिंग का नाम नागेश्वर पड़ा।

इस पवित्र ज्योर्तिलिंग के दर्शन की शास्त्रों में बड़ी महिमा बतायी गयी है। कहा गया है कि जो श्रद्धापूर्वक इसकी उत्पत्ति और महात्म्य की कथा सुनेगा वह सारे पापों से छुटकारा पाकर समस्त सुखों का भोग करता हुआ भगवान शिव के परम पवित्र दिव्य धाम को प्राप्त होगा।

एतद् यः श्रृणुयान्नित्यं नागेशोद्भवमादरात्।
सर्वान् कामानियाद् धीमान् महापातकनाशनम्।।

(शि. पु. श. को. सं. आ. ४)

## आजा ब्रज बिहारी



आजा ब्रिज
बिहारी आजा।
श्याम सुंदर तू दरस
दिखा जा।।
अश्रुओं से मैं तुम्हें
नहलाऊ,
मक्खन खिलाऊ, दूध पिलाऊ,
मेरे मन के मोहन राजा।
आजा श्याम सुंदर तू आजा।
बहुत जन्म से मैं बिछडी हूं,
अब द्वार तेरे पर आके खडी हूं,
कृष्ण मुरारी गले लगाजा।
आजा श्याम सुंदर तू आजा।
मधुर मधुर मुरली है तेरी,
सुनने की है आशा मेरी,
मुरली की तान सुनाजा।
आजा श्याम सुंदर तू आजा।

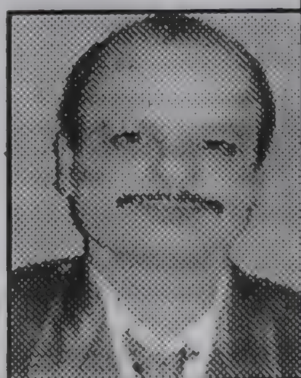
- डॉ. दयाल आशा

# इस महीने के त्यौहार, पर्व व व्रत

## अगस्त - २०११

| | | |
|---|---|---|
| दि. १ सोमवार | : | चंद्र दर्शन<br>लोकमान्य टिळक पुण्यतिथि |
| दि. ४ गुरूवार | : | नागपंचमी |
| दि. ९ मंगलवार | : | पवित्रा एकादशी व्रत |
| दि. १३ शनिवार | : | नारियली पूर्णमा,<br>सत्यनाराण, रक्षाबंधन,<br>स्वामी शांतिप्रकाश जयंती |
| दि. १४ रविवार | : | पंचक प्रारंभ |
| दि. १५ सोमवार | : | राष्ट्रीय स्वतंत्रता दिवस |
| दि. १६ मंगलवार | : | कजली तीज (टीजरी) |
| दि. १७ बुधवार | : | श्री. गणेश चतुर्थी,<br>चंद्रोदय, सूर्य सिंह |
| दि. १८ गुरूवार | : | पंचक समाप्त |
| दि. २१ रविवार | : | श्रीकृष्ण जन्माष्टमी<br>(स्मारत) |
| दि. २३ मंगलवार | : | गोगा नवमी |
| दि. २५ गुरूवार | : | अजा एकादशी |
| दि. २६ शुक्रवार | : | गोवत्स पूजा (वद्दा बारस),<br>प्रदोष व्रत |
| दि. २८ रविवार | : | अमावस्या (पितृकार्य) |
| दि. २९ सोमवार | : | पिठोरी अमावस्या(देवकार्य) |
| दि. ३० मंगलवार | : | चंद्र दर्शन |

श्री. महेंद्र शर्मा
(महाराज)
मो. नं.
०९३२२७७७९४७

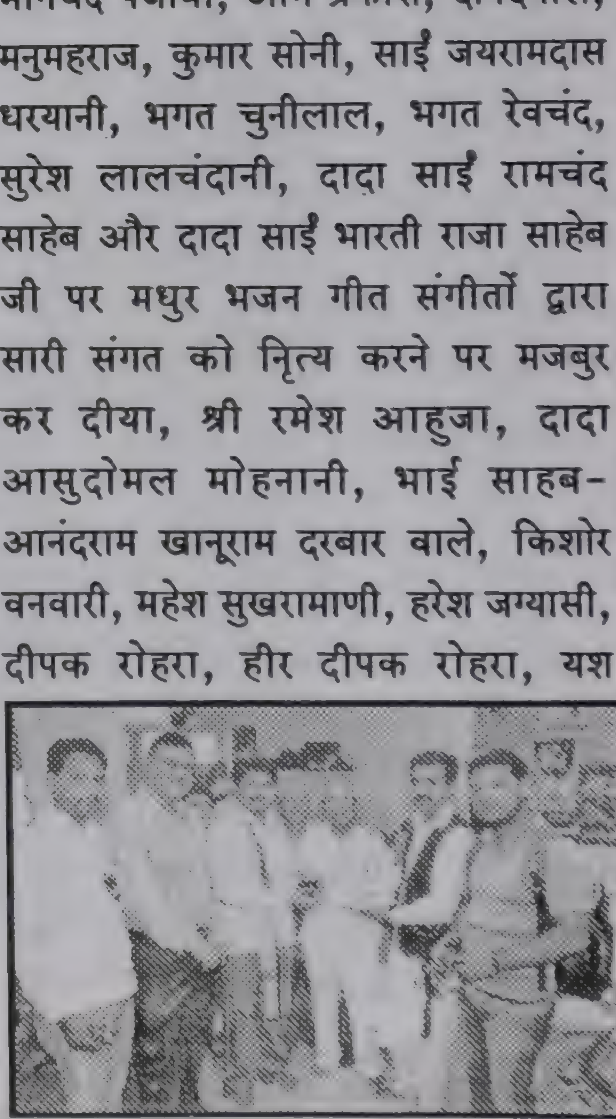


# परम आदरणीय दादा साईं रामचन्द साहिब जी का १८वां वर्सी स्मृति महा उत्सव

## वर्सी उत्सव बड़े ही धूम धाम व हर्षोल्लास से संपन्न



परम पुज्नीय बाबा कोटूराम साहेब जी के आर्शिवाद से दादा रामचंद साहेब जी का १८वां वर्सी उत्सव ९ जुलाई २०११ से ११ जुलाई २०११ तक धूम धाम से मनाया गया। शनिवार ९ जुलाई श्री अखंड पाठ साहिब का आरंभ किया गया तथा माता देवीरानी जी की अध्यक्षता में रात ७ बजे संत कुमार भजन कींतन का आयोजन किया गया। रविवार १० जुलाई सुबह १० से १२ बजे तक संत समागम एक बजे से संतों महात्माओं का भोजन भंडारा, रात ७ बजे बच्चों के लिए विशेष कार्यक्रम, सोमवार ११ जुलाई २०११ के दिन सुबह माता रानी सुंदरीदेवी के आर्शिवाद से कवि समेलन, १.३० बजे भोग साहिब तथा कई नामी ग्रामी कलाकार मास्टर भागचंद ओम प्रकाश मंडली व अन्यों ने संस्कृत कार्यक्रम पेश किए तथा नितनियम वाला आशादीवार आनंद साहेब काका गोबिंद साहेब गुरदासानी, दादा मेंघराजमल और अन्यों ने आरंभ कीया. उसके बाद ११ बजे कवि समेल्लन प्रोफेसर ज्ञानचंद शेहजादपुरी की अध्यक्षता में आरंभ हुआ. प्रोफेसर तेजूजा प्रेमी, नंद हिंदूजा आनंद, वकील दवारकादास संतानी, गीतकार गोविंदा, दादा श्रीचंद साबलानी साहेब, भरत भगत, ईशवर बचवानी, प्रहलाज खसतुरीया, गोप खसतुरीया, गुरल खेमाणी, भागचंद पंजाबी, प्रिंसीपल मनोहर गोपालानी, दया लखी जशनानी, लक्ष्मण दुदानी और अन्यों ने अपनी रचना पेश की. त्तपश्चात गीत संगीत का कार्यक्रम शुरू हुआ. मास्टर भागचंद पंजाबी, ओम प्रकाश, दीनदयाल, मनुमहराज, कुमार सोनी, साईं जयरामदास धरयानी, भगत चुनीलाल, भगत रेवचंद, सुरेश लालचंदानी, दादा साईं रामचंद साहेब और दादा साईं भारती राजा साहेब जी पर मधुर भजन गीत संगीतों द्वारा सारी संगत को नृत्य करने पर मजबुर कर दीया, श्री रमेश आहुजा, दादा आसुदोमल मोहनानी, भाई साहब-आनंदराम खानूराम दरबार वाले, किशोर वनवारी, महेश सुखरामाणी, हरेश जग्यासी, दीपक रोहरा, हीर दीपक रोहरा, यश





रोहरा, जय नाथानी, पप्पु गुप्ता, श्रीमती जयश्री आहुजा, दिलीप लालवाणी, सिन्धी फिल्म जीवन साथी के अभीनेता दुर्गेश थावानी, मैडम संगीता रामसिंघाणी टिनी-टोनी स्कूल की शिक्षका, दादा कोटूमल ईसरानी, माधू चेटवाणी, वाशू मंगतानी (राजू पॉवर लांड्री), गोप पंजाबी, अमरलाल ईसरानी, नरेश दावानी, विशनदास, पंजूमल फ्रूट वाले, शंकर बठीजा-मोती इंटप्रईज, दादा प्रतापराय शिवनानी, राम बठीजा, श्री जगतमल गुरबाणी, तीरथदास टेकचंद, नरेश चुग, राजा, कमलेश पुरसवानी, कैलाश, ललित कुमार, रवि जग्यासी, सुरेशलाल, हरेशलाल, संजयकुमार, जीतेंद्र, सुरेश माखीजा, मोहन जेस्वानी व अन्य उपस्थित प्रेमी भक्तों ने कार्यक्रम में मौज मचाई. दोपहर १.३० बजे गुरू ग्रंथ साहेब का भोग साहेब सम्पन्न हुआ. तत्पश्चात दादा रामचंद शांतीदरबार के गादीनशीन संतकुमार जी ने दादा साईं रामचन्द साहिब व दादा साईं भारती राजा जी के अनमोल प्रवचनों की वर्खा कर सभी भक्तों को मंत्र मुग्ध कर दिया। इस मौके पर मासिक पत्रिका जीवन तरंग के संपादक श्री दिपक रोहरा जी ने दादा रामचन्द साबिह जी की व्याख्यां करते हुए कहा कि मैं सौभाग्यशाली हूँ कि मुझे न सिर्फ दादाजी के दर्शन हुए बल्कि उन्होंने कई बातों में मार्ग दर्शन भी किया। पडोसी होने के नाते नितनियम मुझे दादाजी के दर्शन होते थे व उनसे आर्शिवाद प्राप्त होता था। उसी तरह उनके सुपुत्र दादा नारायणदास जी (भारती राजा) एक नेक आत्मा थे। वे मेरे गुरु के तरह थे, क्योंकि बचपन से ही वे मुझे अपने साथ अदबी बैठकों मे ले जाया करते थे व ज्ञानवान व्यक्तियों से मिलवाया करते थे और जीवन जीने की कला सिखाते थे। यही वजह है कि आज मैं सिंधु अदबी बैठकों मुशायरों व शायरों से जुड़ पाया हूँ। आज भी उनकी कमी मुझे खलती है और उम्मीद करते हैं जैसे बाबा रामचंद साहब का सानिध्य मिला फिर दादा भारती राजा का प्यार मिला, अब संत कुमार जी का भी इस नाचीज पर आर्शिवाद सदा बना रहेगा। कार्यक्रम के अंत में पल्लव पहनकर सभी भक्तों का हार्दिक अभिनंदन कर उन्हें शाल व हार पहनाकर व भरपूर प्रसाद देकर पुर्णाहुती की गई। तत्पशचात भंडारे का स्वादिष्ट भोजन सभी को प्रेम पूर्वक करवाया गया और सभी यह कहकर आनंदित हो रहे थे....

**जय श्री राम! भलो कंदो बाबा कोटूराम....**



# एक यात्रा पुर्नजन्म की ओर.....

पहले मैं पुर्नजन्म में विश्वास नहीं करता था सोचता था कि यह बेकार की बाते हैं और लोग रिश्तों में उलझकर अपना वक्त बर्बाद किया करते हैं। लेकिन मेरे जीवन के कटु अनुभवों ने मुझे अध्यात्म की तरफ मोड़ दिया। कुछ ऐसे दर्द, ऐसे दुःख जो मानो मुझे बचपन से ही विरासत में मिले हैं उन्होंने मुझे बहुत बेचैन कर दिया था, सोचा करता था कि मैंने ऐसा क्या कीया है जो इस जीवन में इतने दर्द, तकलीफें कुछ खास वजहों से सहनी पेड़ रही हैं।

धीरे-धीरे मैं व्यक्ति व्यथित रहने लगा। काम-काज तो बढ़िया या कहें बहुत अच्छा चल रहा था, लेकिन कुछ रिश्तों के टूटने की असहाय पीड़ा को मैं हमेशा महसूस किया करता था। आखिरकार अध्या में मुझे मेरे इन सब सवालों के जवाब मिल गये। आध्यात्म के सहारे मैंने मेरे पिछले जन्म की यात्रा की ओर मुझे मेरे सवालों के जवाब मिल गये। आज मेरे सामने मेरे संपूर्ण जीवन का लक्ष्य आईने की तरह साफ हो चुका है। हर दुःख दर्द और तकलीफ का कारण समझ में आ गया है। हर सुख-वैभव का कारण भी समझ आया है, साथ ही साथ मेरे मन से जिंदगी और मौत दोनों का डर और झिझक पूर्णतः खत्म हो चुका है। मैंने ईश्वर की उस अनंत सत्ता का अनुभव किया है। अब ना ही कोई मेरा शत्रु है और नाही मित्र! नाही सुख की अनुभूती पर इतराता हूं। दुःख की प्राप्ती पर परेशान होता हूं। जीवन का अर्थ समझ चुका हूं। ये सब अपने पूर्व जन्म में लौटने (पास्ट लाईफ रिग्रेशन) के कारण ही संभव कर सका हूं। आज आपका अनुराग निरंतर प्रगती के पथ पर है- इसी ज्ञान के कारण और आज यही ज्ञान आप सब पाठकों के साथ बांटना चाहता हूं। हम भारतीय ही नहीं, बल्कि विश्व की तमाम सभ्यताओं और संस्कृतियों के लोगों का सदियों से पुर्नजन्म में विश्वास रहा है।

ये सिद्धांत काफी हद तक कॉज एंड इफेक्ट थ्योरी पर भी आद्धारित है। आखिर कैसे काम करती है पास्ट लाईफ रिग्रेशन थेरेपी गौरतलब है कि ये सिद्धांत भगवद्गीता का मूल आधार है। हर बात के पीछे कोई कारण जरूर होता है। इस तथ्य में बस उसी को ढूंढा जाता है, और एक बार वह कारण समझ में आ जाता है यां तो फिर उसका समाधान भी निकल आता है। हर घटना का असर हमारे तन मन और आत्मा तीनों पर पड़ता है। तीनों ही स्तरों पर उनके अलग-अलग इमोशन बनते हैं। अगर किसी तरह से इन इमोशन को हटा या मिटा दिया जाये तो वो कारण भी खत्म हो जाते हैं।

महर्षि पतंजलि ने अपने योग सूत्र में पास्ट लाईफ रिग्रेशन को प्रति प्रसव यानी पुर्नजनम (री-बर्थ) के नाम से उल्लेख किया है। री-बर्थ के दौरान व्यक्ति अपनी मेमोरीज को दोबारा जीता है। इस प्रक्रिया में काफी हद तक वो उनसे छुटकारा पा लेता है।

**लौटने की प्रक्रिया:** यहां सवाल उठता है कि कैसे व्यक्ति अपनी पिछले जन्मों या उससे जुडी यादों में जाता है। इस तथ्य के मुताबिक सबसे पहले मेडिटेशन या हिप्नोटिज्म जैसी तकनीकों की मदत से व्यक्ति के दिमाग को रिलैक्स्ड किया जाता है। व्यक्ति को आरामदायक अवस्था से ट्रांस की अवस्था में ले जाया जाता है।

ट्रांस अवस्था में व्यक्ति तक पहुंचता है। यही वो जगह है, जहां पिछले जन्म के अनुभव व यादें इकट्ठी होती हैं। ट्रांस अवस्था में वह अपनी समस्या के कारणों तक पहुंच कर

उससे जुड़े अनुभवों व भावनाओं को दोबारा महसूस करता है। यह दोबारा अनुभव ही उसे उसकी समस्याओं से निजात दिलाता है। पौरांणिक मान्यता की नजर से सिर्फ हिंदुस्तान की नहीं और भी तमाम संस्कृतियां इस तथ्य को मानती हैं। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में शरीर को आत्मा का वस्त्र बताया है। जिस तरह इंसान वस्त्र बदलता है, उसी तरह आत्मा व्यक्ति के मरने के बाद एक शरीर छोड़ कर दूसरा धारण कर लेती है।

गौतम बुध्द ने अपने हजारों जीवन काल में अनुभव किया जिसमें से तकरीबन ५५० जीवन का उल्लेख जातक-कथाओं में मिलता है। इसी तरह महावीर स्वामी को भी अपने पिछले जन्म याद आते थे, जिसका संग्रहित रूप जतो-स्मरण के रूप में मिलता है।

मिस्र देश की सभ्यता पुर्नजन्म में विश्वास रखती है। यहां तक कि यूनानी या ग्रीक संस्कृति में भी रीइंकारनेशन की मान्यता है। जाने माने ग्रीक फिलॉसाफर पाइथागोरस और प्लूटो न सिर्फ इस थ्योरी में विश्वास करते थे, बल्कि अपनी टेक्निक में उन्होंने इसका जिक्र भी किया है।

अब एक बार फिर से इस यात्रा से वापस लौटता हूं। एक ऐसा अनुभव जिसने मुझे आध्यात्म से जोड़ दिया, एक ऐसा अनुभव जिसने मुझे मेरे जीवन का सच्चा अर्थ समझा दिया। अब ना तो खुशी की खुशी होती है और ना दर्द का ऐहसास- सोचा ईश्वर के दिये इस ज्ञान को आप सब पाठकों के साथ बाँट लूं।



इसलिए बाँट लिया। दुःख बांटने से कम होते हैं और सुख बांटने से बढ़ता है।

**सर्वानु सुखानू भवन्तू**

**(अनुराग आचार्य)**

# स्वामी टेऊंराम जी महाराज का वर्सी उत्सव धूम धाम से मनाया गया



लोगों को भगवत प्राप्ति और भगवत भक्ति की राह बताने वाले तथा प्रेम प्रकाश मंडल की स्थापना कर समाज की सेवा करने वाले महान तपस्वी, त्यागी व कर्मयोगी संत सतगुरु स्वामी टेऊंरामजी का वर्सी उत्सव कैंप-५ स्थित स्वामी शांति प्रकाश आश्रम में विधिवत और धूम धाम के साथ मनाया गया। सतगुरु स्वामी टेऊंराम जी का ६९वां वर्सी उत्सव स्वामी शांति प्रकाश आश्रम में मंगलवार ७ जून को पूरे विधी विधान और भव्यता के साथ शाम ५.३० बजे से ७.३० बजे तक मनाया गया। इस अवसर पर कई संत-महात्माओं ने कार्यक्रम में आकर उपस्थित भक्तजनों पर अपनी सत्संग-कीर्तन तथा अमृत वचन की वर्खा कर उन्हें धन्य कर दिया। इस अवसर पर सतगुरु जी की जीवनी पर भी रोशनी डाली गयी, ताकि संतों के त्यागमय जीवन से शिक्षा लेकर लोग धर्म के मार्ग पर आगे बढ़ सकें। इस कार्यक्रम में सभी सतगुरु प्रेमियों ने इस पावन अवसर पर आकर धर्म लाभ अर्जित किया।

**पहरीं सब जो भलो।**



**तंह सदके असां जो भलो।।**

माता रुकमणी देवी

# आपके S.M.S.

## बेस्ट S.M.S. ऑफ मन्थ

आपभी इस नंबर पर S.M.S. कर सकते हैं
Mobile No.: 09403940007.

१) ओम में है आस्था ओम में है विश्वास, ओम में ही शक्ती ओम में है सारा संसार, ओम से होती है अच्छे दिन की शुरूआत बोलो ओम नमः शिवाय।

**रामचंद भाटिया : 09323081886**

२) हर फूल आपको मुस्कान दे, हर सुबह आपको सलाम दे, हम दुआ करते हैं कि अपका एक आँसू भी अगर निकले तो साईं आपको उससे दुगनी मुस्कान दे।

**राजनाथ पप्पु गुप्ता : 09324797276**

३) उस लम्हें को बुरा मत कहो जो तुम्हें ठोकर पहुंचाता है, बल्कि उस लम्हें की कदर करो क्योंकि वो तुम्हें जीने का अंदाज सिखाता है।

**परमानंद गेरेजा : 09322873753**

४) सच वो दौलत है जिसे पहले खर्च करो और जिंदगी भर आनंद पाओ और झूठ वो कर्ज है जो कुछ दिन तो मस्ती करलो पर जिंदगी भर चुकाते रहो।

**यश रोहरा : 09699040180**

५) हर जलते दीपक तले अंधेरा होता है हर रात के पीछे एक सवेरा होता है लोग डर जाते हैं मुसीवत को देखकर हर मुसीबत के पीछे सुख का सवेरा होता है।

**रेनू हरि ॐ : 09321932096**

५) लाईफ में किसी को अपने से छोटा नहीं समझो एक छोटी सी चींटी आपके पैरों को कांट सकती है, पर आप उसके पैरों को नहीं कांट सकते।

**जयकुमार नाथानी : 09321174441**

६) जो गुरु वचन पर डट जाते हैं उन्हें हजार विघ्न बाधाएं आएं फिर भी आध्यितमिक रास्ता नहीं छोड़ते, गुरु में दृढ़ श्रद्धा संसार सागर से पार लगा देती है।

**पहूजा आश्रम : 09371837100**

७) हर कामयाबी पे आपका नाम होगा, आपके हर कदम पे दुनिया का सलाम होगा, मुश्किलों का सामना हिम्मत से करना, दुआ है कि एक दिन वक्त भी आपका गुलाम होगा।

**विजय राहाणे : 09321209377**

८) खुशी उन्हें नहीं मिलती जो जिंदगी को अपनी शर्तों पर जीते हैं, खुशी उन्हें मिलती है जो दूसरों की खुशी के लिए अपनी जिंदगी के मायने बदल देते हैं।

**रमेश मिश्रा : 09322885537**

९) भीगे मौसम की भीगी सी शाम, भीगी सी याद, भूली हुई बात, भूला हुआ वक्त, वो भीता हुआ साथ मुबारक हो आपको २०११ की पहली बरसात।

**भावना लेडवानी : 09960939325**

१०) मिश्री से मीठे हैं सदगुरु के बोल, कोई कैसे लगाए सदगुरु का मोल, हीरे से ज्यादा है सदगुरु अनमोल, तो सदगुरु को याद करके हरि ओम बोल।

**विकास केसवानी : 09321373345**

११) साई कहते हैं उदास ना होना क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ सामने नहीं पर आस-पास हूँ, पलको को बंद कर दिल से याद करना मैं और कहीं नहीं तेरा एहसास हूँ। ओम साई राम।।

**रवि अनुराग : 09321120099**

१२) कभी खुद को काल करके देखो, इंगेज टोन सुनाई देगा, दुनिया से मिलने में सब मस्त हैं खुद से मिलने की सारी लाईनें व्यस्त हैं।

**रमेश आहुजा : 09322422779**

१३) गरीब सुबह जल्दी घर से पेट भरने के लिए निकलता है और अमीर सुबह जल्दी घर से अपना पेट कम करने के लिए निकलता है।

**निर्मल मूलचंदानी : 09757262636**

# माता रुक्मणीदेवी सामाजिक संस्था (रजि.) के द्वारा किए हुए कार्य



१. **सोलाह सोमवार चौमासे का उध्यापन**

हर साल दिवाली के चौथ के दिन पर भगवान शिव शंकर महादेव जी के श्रावण (सोलह सोमवारों) के उध्यापन दिवस कें उपलक्ष्य में बडे ही प्रेम और श्रध्दा के साथ महाआयोजन किया जाता है, जिसमें शहर की असंखय मांताऐं बहनें शहर व राज्य की कई हस्तियां व श्रद्धालु आकर लाभ उठाते है, जिसमे संस्था की तरफ से महाप्रसाद का वितरण किया जाता है, व व्रत रखने में असमर्थ बहनो को निशु:ल्क (सोलह सोमवारों की पुजा सामग्री इत्यादी) सेवा दी जाती है ।



२. **पशु पंछीयों की सेवा**

मानवता का यह धर्म है कि न सिर्फ अपनी रोजी रोटी की सोचे, बल्कि हम पर निर्भर जीव, जंतु और पशु पंछीयों की भी सोचे । मानवता के ऐसे विचार निभाते हुए माताजी ने पंछीयो को दाना डालना व मीठी बुंधी देने का कार्य नियम से निभाते है, बल्कि अपने औरों को भी पशु पंछीयों को तकलीफ न देना व उन्हे दाना देना ऐसे संकल्प करवाती है ।



३. **गरीब, विधवा, वृद्ध व जरुरतमंत माताओं बहनों को अनाज बॉटना**

हर महिने अमावस के पावन दिन बुजर्ग महिलाओं विधवाओं और जरुरतमंद बहनों को राशन व नकदी मदद दी जाती है ।



४. **नये व पुराने कपड़ों का सदउपयोग**

बडे घरों से पुराने कपड़े इकट्ठा कर के व उनमे अल्ट्रेशन करके बडे बडे फेक्ट्रीयों से सस्ते दरों पें नय कपडे लेकर उन्हें हरिद्वार, मथुरा, काशी वृंदावन, बद्रीनाथ, तिरुपति बालाजी, रामेश्वरम् जैसे पवित्र स्थानों व मुरबाड या आदिवासी इलाकों में ले जाकर गरीब जरुरतमंद आदिवासीयों को बांटे जाते है ।



५. **सिंधी भाषा को बढावा**

सिंधी भाषा को बढावा देने के लिए सिंधी में अव्वल आए बच्चो को पुरस्कार देकर सन्मानित किया जाता है, और पढाई में असर्मथ बच्चों को सहकार्य कर पढ़ाई में मदद की जाती है ।



६. **शादी के रिश्ते जोडना**

संस्था की तरफ से कई लडके लडकीयों के रि
उनकी माँ-बाँप की रजामंदी से उनकी कुंडली मिलाके उ
जाते है । तथा छोटी-मोटी बातों को लेकर आपस में हो
शंकाओं की वजह से कई घर बरबाद हो जाते है ।
सुनकर तथा ऊनके बीच गलत-फहमी दूर करके उन
झगडा सुलझाया जाता है । माताजी के आशिर्वाद से
तक कई घर तबाह होने से बचाये गये हैं ।




७. **मुफ्त लाईब्रेरी (पुस्तकाल्य)**

आज के इस युग में जहां बच्चे बडे तथा खास
माताओं, बहनों को टि. व्ही. से फुर्सत नही मिलती और
सास बहू के सिरीयल में अटकी रहती है, तो उन माता
बहनों को जागृत करने के लिए विशेष तौर से लाईब्रे
शुरुआत की, जिस में धार्मिक, सामाजिक, न्यायिक न्यु
पेपर तथा वे साहित्य है, जिनसे आम आदमी को लाभ मि
सके । जिसमें सिंधी, देवनागरी, हिंदी, मराठी व अंग्रेजी
सत साहित्य मिल सकते है ।



८. **अलग अलग क्षेत्रों में समाज हित व अछे का
करने वाले कार्यशील सज्जनो को माता रुक्मिणी दे
सामाजिस संस्था की तरफ 'माता रुक्मिणीदेवी अवा
देकर सनमानित किया जाता है।**

१) कार्यसम्राट नगरसेवक २) श्रेष्ठ पत्रकार ३
श्रेष्ठ उद्योगपती ४) श्रेष्ठ वकील ५) श्रेष्ठ शिक्षक ६) श्रे
समाजसेव ७) श्रेष्ठ लेखक ८) श्रेष्ठनागरिक ९) श्रे
प्रधायपक ११) श्रेष्ठस्कुल संस्थापक १२) श्रेष्ठ ट्युश
क्लासेस ।



९. **जेष्ठ नागरिकों के लिए**

जेष्ठ नगरिकों के लिए अच्छे कार्य करना जै
पिकनीक, तीर्थ यात्रा व धार्मिक स्थलों पर पिकनी
करवाना मुशायरा या गीत संगीत का कार्यक्रम रखना ता
उनके बुजुर्ग दिलों को खुशियां पहुचें ।



१०. **सिंधी भाषा को बढावा**

सिंधी भाषा को बढावा देने के लिए व फिल्मों क
तरफ आज की पीढी का आकर्षण देखते हुए संस्था की औ
से सामाजिक व पारिवारीक संदेश पहुंचाने के लिए अशो
अनिल मल्टिप्लेक्स में सिंधी फिल्म 'जीवन चक्र' दिखा
गयी।



## ११. जीवन तरंग मासिक पत्रिका

समाज में कीए गए अच्छे लोंगो के किए गए कार्यों को आम तक पहुचाने हेतु संस्था की और से हर माह ‘‘जीवन तरंग’’ मासिक पत्रिका प्रकाशित की गई है । जो आज २००० से भी ज्यादा प्रतियों की रुप में संपूर्ण भारत में लोगों को जनजागृत कर रही है ।



## १२. लोगो तक उपदेश

लोगों तक व समाज तक उपदेश पहुंचे, वे जागृत हो , धर्म कर्म के कामों में उनकी रुची बढे, इसलिए हर साल मुफ्त में सी.डी. डि.व्ही.डी. बांटी जाती है, ताकि जनजागृती हो ।



## १३. मुफ्त न्यायीक सलाहें

ॲड. नरेश रोहरा हमारे संस्था के साथ जुडें है सो वक्त बे वक्त वे अपने वकील दोस्तों की मदद से मुफ्त न्याय की कैम्प लगाते है ताकि आम गरीब इन्सान व माताओं बहनों को कानुन की जानकारी दे सके तथा उनके हक्क के बारे में जानकारी दे सके जिसमे हमारे उल्हासनगर शहर के कई सन्माननीय वकीलों का योगदान मिलता है । संस्था की तरफ से भेजे हुए क्लांईट को हमारी संस्था से जुडे हुए वकीलों द्वारा विशेष सुविधा दी जाती है । १. ॲड. दादा आनंदराम मुलचंदानी, २. ॲड नरेंद्र सोनीजी, ३. ॲड. पीटर लोबो.




## १४. नए लेखकों व साहित्यकारों को सहयोग

नए लेखक व साहित्यकारों को सहयोग कर सन्मानीत कर बढावा देना ताकि वे अपने विचार समाज तक पहुंचा सकें ।

## १५. विद्यार्थीयों को प्रोत्साहन देना -

जो गरीब बच्चे आज के महगांई के दौर में स्कुल और क्लासेस की बडी बडी फीस भरने में असमर्थ है, उनकी फीस इस संस्था की तरफ से भरी जाती हैं जिसमें हमें शहर के कई क्लासेस की तरफ से कम से कम फीस लेकर सहयोग मिलता है ।





१५. जलसेवा ही उत्तम सेवा

माताजी ने जलसेवा को विशेष रुप से ध्यान में रखते हुए ''हरि ॐ काकाजी का प्याऊ'' का स्थायी रुप से प्रारंभ करवाया । तथा जब भी शहर में संत श्री आसारामजी बापू व अन्य ऋषिमुनी या अन्य संतगण आते, तो उनके साधकों के लिए प्रसाद, जल व शरबत से तरोबार करवाया जाता ।

## माता रुक्मणीदेवी सामाजिक संस्था (रजि.) के द्वारा भविष्य में होने वाले कार्य

१. पोलीओ की कैम्प लागकर लोगों को जाग्रत करना ।

२. मुफ्त मेडीकल कैम्प लगाना ।

३. गरीब, बीमार, जरुरतमंद लोगो के लिए मुफ्त अेम्बुलंस सेवा मुहय्या करवाना ।

४. आंखे अनमोल नुर है जिनसे दुनिया की सुंदरंता को निहार सकते है, कई गरीब या बुजुर्ग जरुरतमंद जो आंखो का ऑपरेशन (मोतीबिंदु) न करा सकते हो उनको संस्था की तरफ से सहयोग करके आँखो का नुर लौटाना ।

५. रक्तदान का शिबीर लगाकर उन असाहय पिडित मरिजों को संस्था द्वारा उपलब्ध कराना ।

६. जाति, धर्म, लिंग, वर्ग, संप्रादय, भाषा आदि की संकीर्णता को दूर कर पूरे राष्ट्र एवं विश्व में समतामूलक समाज की स्थापना ।

७. स्वयंरोजगार योजनाऐं : माताऐं बहने किसी पर निर्भत न रहें, उनकी बजाय आत्मनिर्भर बनें । उनके लिए लघु-उद्योग जैसे पापड, कचडी बनाना, सिलाई के कार्य करना, ब्युटी पार्लर, मोमबत्ती बनाना, अगरबत्ती बनाना इन लघु उद्योगों का प्रशिक्षण देना, ताकि उन्हें रोजगार मिलें । तथा संस्था की और से लघु-उद्योग की स्थापना करना ।

८. कॉम्प्युटर का ज्ञान : आज के आत्याधुनिक युग में लोगों में कॉम्प्युटर का ज्ञान बढाने के लिए गरीब बच्चों असाहय, जरुरतमंद महिलाओं को कॉम्प्युटर का ज्ञान देना । जिसमें उन्हें कम्प्युटर के विविध कोर्स का ज्ञान देना ताकि वे आत्मनिर्भर बनकर भारत का भविषय उज्जवल कर सकें ।

९. शिक्षण संस्था की स्थापना : आज के इस महंगाई में जहां लाखों रुपये डोनेशन और फीस के रुप में लिये जाते है, उससे कई माताऐं और बहनों के बच्चे शिक्षा से वंचित रह जाते है । ऐसे बच्चों के लिए स्कूल खोलना, तथा उन्हें पढा लिखाकर विद्वान बनाना । क्योंकि यहीं पीढ़ी आने वाले कल के भारत को बुलंदीयों तक ले जायेंगी ।

१०. बेघरों को सहारा : बेघर व अनाथ बच्चों को निरक्षित होने से बचाना तथा उन्हें फुटपाठ की जींदगी से लाकर परिवार की राष्ट्रीय मुख्य धारा से जोड़ना ? ताकि बालमजदूरी जैसे घोर अपराध न हो सकें ।

ऐसे कई कार्यो को भविष्य में पूरा करने के लिए संस्था को ढेर सारे धन व योगदान की जरुरत पडती है, जो संस्था को आपके द्वारा मदद मिल रही है, उससे ज्यादा से ज्यादा से सामाजिक कार्य किए जा सकते है ।

माता रुकमणी देवी सामाजिक संस्था (रजि) के नाम चेक भेजकर असाहय गरिबों और बेसहारों की मदद करें, क्योंकि उन में ही भगवान है । आप इस तरह आपना मदद का हाथ बढाकर माता रुकमणी देवी सामाजिक संस्था (रजि) में योगदान दे सकते है ।

*" Helping Hands are better Praying Lips "*

# ज्ञान की बातें....



## शिक्षा जागृति

भगवान शिव शंकर के चौमासे के व्रतों में माताजी शिव-कथा के साथ साथ ऐसी सरल शिक्षाप्रद कहानीयां भी बताती थी जिससे लोगों में श्रद्धा व जागृती का विकास हो व नारी जाती का समाज में उत्थान हो। उन्हीं कहानीयों में से एक कहानी उपस्थित है....

भारतीदेवी की नियुक्ति एक गांव में अध्यापिका के रूप में हुई। गांव में नया-नया विद्यालय खुला था, लेकिन गांववाले अपने बच्चों को स्कूल में भेजने को तैयार नहीं थे। उन्हें अपने बच्चों को पढ़ाने की जरूरत ही महसूस नहीं होती थी। भारती देवी घर-घर जाकर लोगों को अपने-अपने बच्चों को स्कूल में भेजने के लिये जागृत कर रही थीं लेकिन लोगों पर उनकी बातों का कतई प्रभाव नहीं पङ रहा था।

एक दिन गांव में रामाबाई के घर एक तार आया। जिसे देखकर रामाबाई ने रो-रो कर पूरा घर सिर पर उठा लिया। इससे उसके घर लगभग पूरा गांव इकट्ठा हो गया और रामाबाई को तसल्ली देने लगा। तभी वहां पर भारती देवी भी पहुंच गई। वहां पहुंचकर जब उसे सारे मामले का पता चला तो उसने रामाबाई से वह तार दिखाने को कहा। रामबाई ने रोते-रोते मास्टरनी को वह तार पकड़ा दिया।

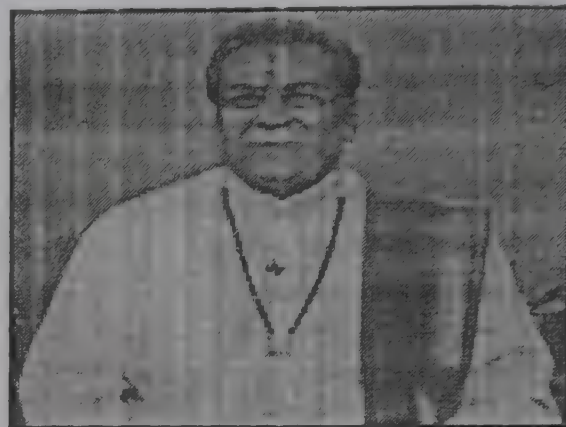
भारती देवी ने जब उस तार को पढ़ा तो उसे हंसी आ गई। वहां उपस्थित लोगों ने भारती देवी से ऐसे मौके पर हंसने का कारण पूछा तो भारती ने लोगों से कहा, इसमें रामाबाई के पति के मरने की खबर नहीं बल्कि उसकी तरक्की की खबर है।

तब भारती ने वहां उपस्थित लोगों से कहा, यदि आज रामाबाई पढ़ी-लिखी होती तो इस खुशी की खबर को पाकर रोने-पिटने की बजाय पूरे गांव में मिठाइयां बांटती। आज के युग में बिना शिक्षा के मनुष्य तरक्की नहीं कर सकता। आपके गांव में इसीलिए सरकार ने सभी को शिक्षित करने के लिये विद्यालय खोला है। आप सब अपने-अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए स्कूल में भेजें ताकि आनेवाले समय में रामाबाई जैसा व्यवहार न हो और अपने अपने बच्चों का भविष्य सुखमय हो सके। भारती देवी के शब्दों ने उपस्थित जनसमुदाय पर जादू-सा असर किया और सभी ने अपने-अपने बच्चों को स्कूल में भेजने का निश्चय कर लिया।

*"Helping Hands are better than Praying Lips"*

# आपके तारे (आर्य गुरुजी द्वारा)

## अगस्त २०११



मेष (ARIES):- यह महीना आपके लिए कुछ आर्थिक चिंताओं के बावजूद उत्साहजनक और मनोरंजक रहेगा। घर परिवार के सदस्यों का सहयोग मिलेगा। चालाकी और चतुराई से जटिल से जटिल समस्याओं का हल निकालने में सक्षम होंगे। सतर्क रहने से कोई भारी सफलता भी इस माह के पूर्वार्ध में मिल सकती है। उत्तरार्ध में आप अपनी समस्याओं के बावजूद दूसरों की उलझनों को सुलझाने में रूचि लेंगे। इस बीच आप किसी लेन देन में भीं कामयाब होंगे।

वृष (TAURUS):- अगस्त महीने का पूर्वार्ध रोग और कर्ज से छुटकारा दिलाएगा। शत्रुओं और विरोधियों के हथकंडे नाकाम होंगे। स्वजनों से सहयोग मिलेगा और व्यापार–व्यवसाय की स्थिती सफलता सूचक रहेगी। इस माह के तीसरे हफ्ते से फिर गोचर की अनुकूलता का लाभ मिलेगा। परीक्षा या इंटरव्यू में विजय मिलेगी। राजनीतिक वर्चस्व बढेगा। घर–परिवार और समाज में आपका यश–सम्मान बढेगा।

मिथुन(GEMINI):- अगस्त महीने का पूर्वार्ध स्वास्थ्य और अर्थ व्यवस्था के सुधार में व्यतीत हो जाएगा। कुछ नये कामकाज के अवसर मिलेंगे या फिर किसी रूके हुए लाभ की प्राप्ति होगी। व्यावसायिक प्रयासों के संतोषजनक परिणाम मिलने लगेंगे। चतुर एवं कुटिल प्रवृति के लोगों से दूरी बनाए रखने में सफलता मिलेगी। महीने के उत्तरार्ध में परिस्थितियां बदलती हुई दिखाई पडेंगी। कामकाज की नई व्यवस्था अच्छी तरह से चलने लगेगी।

कर्क (CANCER):- अगस्त महीने के दूसरे सप्ताह तक व्यापार एवं कामकाज की स्थिति अस्त व्यस्त रहेगी। कुछ जातकों को लंबी यात्रा आदि भी करनी पड सकती है। नौकरी में स्वाभिमान के कारण कोई संवेदनशील पद त्यागना पड सकता है। सहकर्मियों एवं सगे संबंधियों के कारण अलगाव या एकांतवास की स्थिती आ सकती है। महीने के उत्तरार्ध में शत्रु एवं विरोधियों की चाल नाकाम होगी। स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहने के कारण परिश्रम कष्टदायी होगा।

सिंह (LEO):- इस महीने में धन के कारण घरेलू वाद–विवाद अथवा आसपडोस के लोगों के बीच वैमनस्य

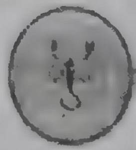
पैदा होने से मन में विकार जाग सकते है। किसी से शारीरिक रूप से प्रतिशोध लेना आपके पक्ष में नए विवाद को जन्म दे सकता है। राजकीय सेवा या आजीविका से संबद्ध जातक अपने सहयोगियों या वरिष्ठों से न उलझें वरना किसी स्थायी या अस्थायी लाभ से वंचित रहने की आशंका पैदा हो सकती है।



**कन्या (VIRGO) :-** यह महीना आपकी कार्यसूची में छोटे–मोटे लाभ को लेकर आ रहा है। कामकाज में अनावश्यक उलझनें पैदा हो सकती हैं और कुछ मामलों में व्यर्थ की चिंता पैदा होगी। यदि आपके पास नकद धन या साख आदि हो तो चोरी या गुम हो जाने का डर रहेगा। कारोबार या आजीविका में साथी सहयोगियों से अनबन की आशंका रहेगी। पर्याप्त धन जमा रहने के बावजूद खर्च को देखते हुए उसमें कमी नजर आएगी। निवेश या उद्योग धंधों में धन लगाना जोखिम पूर्ण होगा।



**तुला (LIBRA):-** इस महीने के पहले और दूसरे सप्ताह में परिवार के सदस्यों की आर्थिक महत्वाकांक्षा बढेगी। धन–लाभ के उपाय संभव होंगे। कोई नया लाभदायक काम मिलेगा। मित्रों और रिश्तेदारों से लाभ होगा। अधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। महीने के उत्तरार्ध में काम के सिलसिले में निकट दूर की यात्रा आवश्यक होगी। मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। महीन के अंत तक इनकम बढेगी और पैसा जमा होगा।



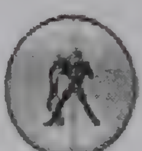
**वृश्चिक (SCORPIO):-** इस महीने आपके मंद करोबार से विरोधियों को बढावा मिल सकता है। पूर्वार्ध में व्यस्तता अधिक होगी। महीने के अंत तक जीवनसाथी का सहयोग जरूरी होगा। लाभ में कमी रहेगी।



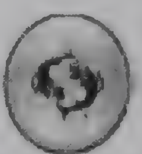
**धनु (SAGITTARIUS) :-** इस महीने में पार्टनर का व्यवहार और स्थिती का सुधार भरोसा रहेगा। संयम आवश्यक है। पैतृक जायदाद और पारिवारिक समस्यायें महत्वपूर्ण होंगी। महीने के अंत में अधूरे कार्य को निपटाना कठिन होगा।



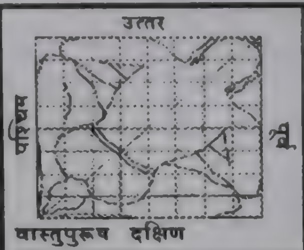
**मकर (CAPRICORN):-** इस महीने आजीविका की समस्या से संबंधित किसी को परामर्श देने की भूल कर सकते है। व्यक्तित्व का प्रभाव बढेगा। खाली हुए धन कोष की पूर्ति संभव होगी। दावतों में अपने खान–पान को सीमित रखें।



**कुंभ (AQUARIUS):-** इस महीने का पहला हिस्सा सुख आराम और शांतिदायक वातावरण में गुजरेगा। घर में वस्त्र आभूषण और बहुमूल्य साजोसामान की बढोतरी होगी कुल मिलाकर महीने का समापन उत्साहजनक वातावरण में होगा।

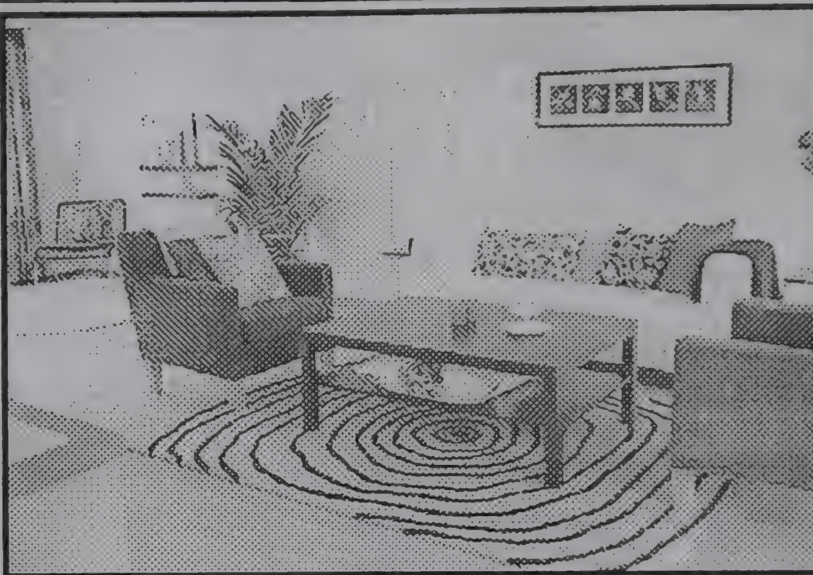


**मीन (PISCES) :-** इस महीने के पूर्वार्ध में सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों से जुडे लोगों के बीच आना जाना होगा। महीने का उत्तरार्ध शुरू में कुछ परिवर्तन लाएगा। कामकाज में फेर बदल की आशंका रहेगी।




# वास्तुशास्त्र का ज्ञान

## वास्तु में परिवर्तन जरा संभलकर



कुछ लोग पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों आदि में वास्तु से संबंधित लेखों को पढकर ही घर या वास्तु में परिवर्तन करा लेते हैं। इस प्रकार के परिवर्तन नुकसानदायक साबित होते हैं। परिवर्तन कराते वक्त कई लोग ईशान कोण की पवित्रता को भी नजरअंदाज कर देते हैं, जिसे परिवार की सुख-शांति के लिए ठीक नहीं माना जाता।

प्रकृति का निर्णय पांच मुख्य तत्वों अग्नि, जल, वायु, भूमि व आकाश से मिलकर हुआ। इन्हें पंच तत्व या पंच महाभूत कहा जाता है। हमारा शरीर इन्हीं पांच तत्वों से मिलकर बना है। अतः संपूर्णधरती व इसके वातावरण तथा हमारे शरीर में इनका संतुलन जरूरी है। वायु शास्त्र के नियमों के अनुसार हम जिस घर में रहते हैं, उसमें विद्यमान पांच तत्वों की प्रकृति व हमारे शरीर से समुचित तालमेल आवश्यक है। जिस भवन में पंच महाभूतों में परस्पर तालमेल नहीं रहता या कोई कमी या अधिकता रहती है, तो इसका असर वहां रहनेवाले सभी प्राणियों पर पङता है। उदाहरण के लिए यदि भवन के आग्नेय (दक्षिण-पूर्व) में अग्नि, इृशान (उत्तर-पूर्व) में जल या नैत्रत्य (दक्षिण-पश्चिम) में भू-स्वामी की अनुपस्थिति रहती है, तो इसका प्रभाव वहां रहनेवाले सभी प्राणियों पर पङता है। इसके साथ ही यदि अतिथि गृह ड्रइंग रूम वायव्य (उत्तर-पश्चिम) में न होकर नैत्रत्य (दक्षिण-पश्चिम) में हो, तो उसकी मर्यादा, वांछित प्रभाव व फल के साथ ही साथ उसकी उपयोगिता पर भी प्रतिकूल प्रभाव पङ सकता है। भवन में परिवर्तनकराते वक्त ऐसा देखा जाता है कि अज्ञानतावश या जान-बूझकर कई लोग अग्नि की दिशा में जल या जल की दिशा में अग्नि का प्रवेश करा लेते हैं। इससे पारिवारिक सुख-शांति का खतरा पैदा हो जाता है। अतः भवन निर्माण के समय इसका ध्यान अवश्य रखें की प्रत्येक तत्व अपने-अपने स्थान पर समुचित रूप से विद्यामन रहे तथा कोई भी तत्व एक-दूसरे के स्थान में प्रवेश न करें।

.भवन के नैत्रत्य को सर्वाधिक ऊंचा व सबसे भारी रखना चाहिए, क्योंकि यह

स्थायित्व होता है। इसी प्रकार भवन की चारदीवारी के मध्य भाग को, जिसे ब्रह्मस्थान कहा जाता है, खाली या हल्के से हल्का रखना चाहिए, क्योंकि वास्तु में इसका वहीं स्थान है, जो हमारे शरीर में नाभि का है। कुछ समय पहले एक व्यावसायिक परिसर में वास्तु का निरक्षण करते वक्त मैंने पाया कि भवन के ठीक मध्य में एक कॉलम बना हुआ है, जिस पर न केवल भवन की छत का संपूर्ण भार है, बल्कि अपनी जरूरतों को ध्यान में रखते हुए उस पर क्रास ऐंगलों द्वारा मशीनो के लोडिंगवाले भाग को भी जोड़ रखा है।

फलस्वरूप उसके ब्रह्मस्थान पर अत्यधिक भार पड़ रहा था। पूछने पर उसके मालिक ने स्वीकार किया कि जिस दिन से इस स्थान पर भार बढाया गया है, उसी दिन से उन्हें नुकसान होना शुरू हुआ। ऐसा देखा जाता है कि कुछ लोग अपने भवन में इस प्रकार से परिवर्तन कराते हैं कि अग्नि की दिशा में जल या जल की दिशा में अग्नि का प्रवेश हो जाता है। कुछ लोग पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों आदि में वास्तु से संबंधित लेखों को पढकर ही घर या वस्तु में परिवर्तन करा लेते हैं। इस प्रकार के परिवर्तन नुकसान साबित होते हैं। परिवर्तन कराते वक्त कई लोग ईशान कोण की पवित्रता को भी नजरअंदाज कर देते हैं, जिसे परिवार की सुख-शांति के लिए ठीक नहीं माना जाता। इस प्रकार के परिवर्तन नुकसानदायक साबित होते हैं। इसीलिए पाठकों की भारी मांग पर उनके हितों को ध्यान में रखते हुए संस्था द्वारा यह लेख प्रकाशित किया गया है।

# जगदीश देवानी जग्गू मूवीस को जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ

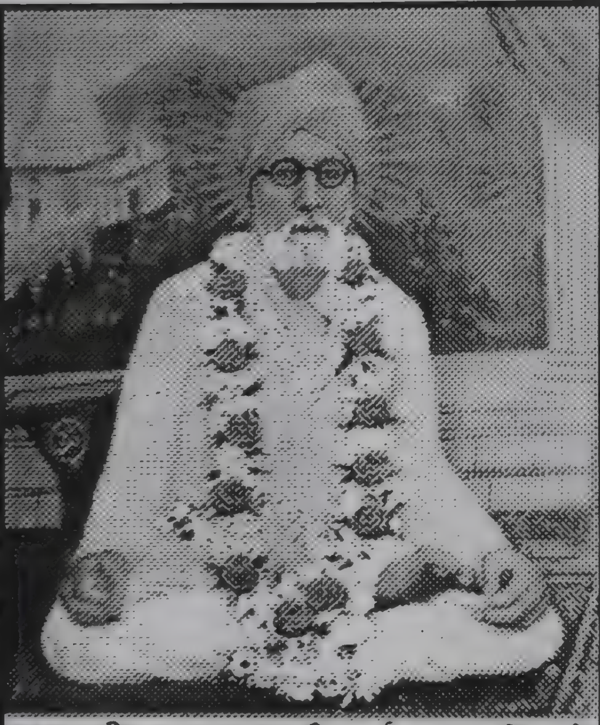


माता रुक्मणी देवी सामाजिक संस्था (रजि.) की तरफ से साल २०१०-२०११ श्रेष्ठ सीधा प्रसारण (लाईव टेलीकास्ट) के लिए सन्मानित जग्गू मूवीस के जगदीश देवानी को जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ। जग्गू भाई महाराष्ट्र स्थित अकोला के एक छोटे से शहर से आकर कड़ी मेहनत की पश्चात उन्होंने जग्गू मूवीस के नाम से उल्हासनगर शहर में अपना व्यवसाय शुरू किया। शादी व अन्य कार्यक्रमों का काम लेकर सभी लोगों से रिश्ते जोड़े। आखिर जगदीश देवानी की मेहनत रंग लाई कि आज वे न सिर्फ उल्हासनगर बल्कि आस-पास में लाईव टेलीकास्ट में नं.१ के स्थान पर बने हैं। चाहे वह पारमपारिक कार्य हो या संतों का सत्संग या राजनीतिक मंच प्रत्येक हर संस्था, हर संत, हर राजनीतिज्ञ की चहीते हैं जगदीश देवानी। अपने परिश्रम मधुर व सरल स्वभाव के वजह से उन्होंने हर एक के दिल में अपना स्थान बनाया है। आज ३१ जुलाई पर श्री जगदीश देवानी के जन्मदिन पर शहर के कई गणमानियों ने उन्हें जन्मदिन की शुभकामनाएँ दीं। माता रुक्मणी देवी सामाजिक संस्था (रजि.) व जीवन तरंग परिवार की तरफ से भी श्री जगदीश देवानी उनके परिवार व विशेष तौर पर उनकी माताजी (राधास्वामी) को हार्दिक शुभकामनाएँ देते हुए यह शुभेच्छा प्रकट करते हैं कि शहर का यह अनमोल नगीना एक दिन गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में ज्यादा से ज्यादा सीधा प्रसारण कर अपना व अपने शहर का नाम रोशन करे।

रख रोहड़ीअ वारे ते.....

# हमारा शहर, हमारे संत

## साईं धर्मदास साहेब जी की जन्म साखी



प.पू.श्री.१००८. स्वामी धर्मदास साहिबजी

साईं धर्मदास साहेब जी का अवतरण (जन्म) संबत चेट १९१२ तारीख (ईस्वी सन १८५४) सिन्धू शहर अब के पाक्स्तिान ठोङही जिल्हा (लाड़काणा) सेठ मटूमल जी के घर हुआ. साईंजी मात्र दो माह के थे वे माताजी के गर्भ में ही थे. तभ सेठ मटूमलजी का निधन हुआ था। कुछ महीनों बाद साईंजी का आगमन हुआ. कुछ वर्षो बाद साईंजी थाड़े बड़े हुए। साईंजी के परिवार में तीन जन ही थे। साईंजी की माताजी, बड़ा भाई कर्मचंद व साईंजी. साईंजी गरीबी के कारण बहुत ही कम पढ़ाई की थी, व पैसा कमाना चाहते थे। परंतु पैसा कमाने के लीए उम्र व तजुरबा चाहिए. इसी कारण साईंजी अपने परिवार की माली हालत सुधारने हेतू १२ साल की उम्र में अपना घर छोङ (मीरोखान) मेणनि के निकट अपने मामाजी की दुकान चलाने लगे। दुकान चलाने संभालने के साथ साईं धर्मदासजी सत्संग भी सुनते थे। सत्संग जाते समय प्रसाद भी लेकर जाते व शक्कर भी लेकर जाते रास्ते में एक विशाल पीपल का वृक्ष था। वहाँ पर शक्कर चढ़ाते ताकी कीड़े, मकोड़े व अन्य जीव जंतू इसे खा सकें। उसके साथ ही सत्संग भवन में मटके भर सेवा निसर्वाथ भावना से कीया करते। साईंजी के इस व्यवहार को देखकर एक दिन सेठ बसंतराम ने साईंजी से कहा, क्यों न हम दोनों साथ में मिलकर धन्दा करें। बसंतराम व साईं जी ने मिलकर धन्दे की शुरूआत की, भगवान की दया से रोज अच्छी बिक्री के कारण धन्दा खूब अच्छा चलने लगा. साईंजी अपनी दुकान संभालते व प्रभु की अर्चना व स्मरण करते. साईंजी बाकी दुनिया व दुसरों की दुनिया धारी से परे रहते. एक दिन रांवहती (सत्संग भवन में एक बडे संत अचानक आ पधारे) साईं धर्मदासजी अपनी दुकान बंदकर मेणिन से रांवहती सत्संग भवन जा पधारे प्रेमीयों ने पुछा साईंजी को अपना बनाईये? संत ने फरमाया धर्मदास सभी परीभाशांओ में हुआ है पास, संत नगरी में इनका दरजा है खास मगर देर पड़ेगी और १२ मास थोड़ा कर इंतजार तो कामिल गुरू मिलेंगे खास, जो इसके कार्य करेंगे रास।

कुछ समय पशचात धर्मदासजी के मामा की सुपुत्रीयों की शादी हुई। शादी के दिन शादी में साईंजी की माताजी भी आई थी। वहाँ एक



बड़े संत साईं नेभूराम साहेबजी भी आए हुए थे। साईं नेभूराम साहेबजी ने शादी में सुंदर से कलाम गाए उन कलामों को सुन साईं धर्मदासजी प्रभु की याद सुदबुद्ध खोकर उन में लीन हो गए। सभी लोगों ने साईंजी को बहुत हिलाया। परंतु साईंजी हिलाने से भी न हिलें। लोग आवाज लगाकर परेशान हो गए परंतु साईंजी को कुछ सुनाई ना दे। सभी ने हर प्रकार की कोशिश कर थक गए। तत्पश्चात साईंजी की माताजी ने साईंजी को जोर जोर से पुकारा परंतु साईंजी जगह से हिले ही नहीं। यह स्थती देख साईंजी की माताजी को मूर्छा आ गई सुबह होश में आने पर देखा साईंजी अभी तक उसी स्थती में हैं तभी माताजी व अन्य जन मिलकर स्वामी नेभूराम जी के पास आ पधारे। साईं नेभूराम साहेब को पुरी बात बताकर साईंजी की माताजी स्वामी नेभूराम साहेब जी से विनती करने लगी, स्वामी ने माताजी को यह आथात देते हुए कहा धर्मू जरूर ठीक होगा व धर्मू तो अवतार है, इशक का, प्रभू जरूर उसे ठीक करदेगें। वहाँ जाकर साईंजी से कहा उठ अशिक धर्मू मैंने तुझे ईशक ईनाम रूप में प्रदान कीया। इतना सुन स्वामी धर्मदासजी तुरंत उठे व नेभूराम साहेबजी के चरणों में गिर पड़े। यह दृश्य देखकर सभी भक्त आश्चर्य चकित हो गए।

एक दिन साईं नेभूराम साहेब जी को इत्तफाक से धर्मदास जी रास्ते में मिल गए। साईं नेभूरामजी धर्मदासजी को अपने साथ लेकर अपने गुरू के पास रोहडी में साईं वसणशाह के पास ले आए साईं वसण शाह, धर्मदासजी को देखते ही कहा की यह बालक फकीरी अख्तयार करेगा व तुम्हारा नाम रोशन करेगा। साईं व वसण शाहजी बालक धर्मदासजी को देखकर बहुत हर्षीत हुएं व धर्मदासजी को हजारों आर्शिवाद दीये। रोहड़ी में साईंजी व नेभूराम साहेब जी दो सप्ताह रहे। तत्पश्चात मेणनि में वापस लौटकर रोज सत्संग में जुट गए. उधर साईं धर्मदासजी माता को यह फिक्र होने लगी कि कहीं यह लड़का शादी से किनारा न कर ले। इसलिए उनकी माताजी ने अपने दोनों सुपुत्रो की शादी की बात चलाई. एक जगह रिश्ता उन्हें पसंद आया। उस वर्ष की होली महापर्व पर बात पक्की होनेवाली थी। साईंजी ने बात को सुन अपने दुसरे कान से निकाल दी वह तो परमात्मा भरोसे बैठे थे जो परमात्मा को मंजूर वही होगा। जिसकी परमात्मा से शादी हो गई हो तो उसे फिर शादी कराने से क्या फायदा। जिसका जीवन साथी स्वयं परमात्मा है, उसे दुसरे जीवन साथी की क्या आवश्यकता।

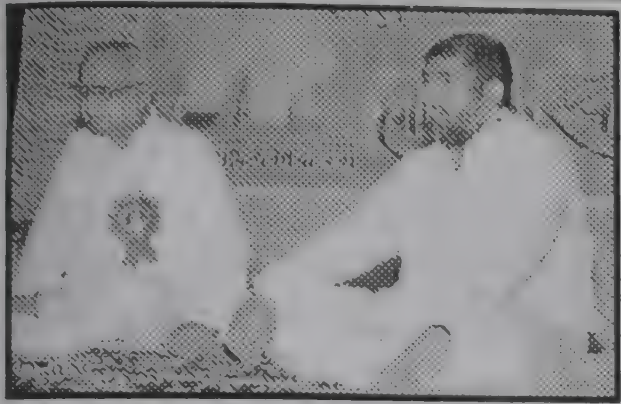
होली का दिन आखिर आ गया सभी जन खुशी से झुम रहे थे। चारों तरफ खुशी की लहर छांई हुई थी, जोर-जोर से नगाड़े बज रहे थे। लोग अपने पैरों को थिड़कने से रोक नहीं पा रहे थे, तभी साईंजी के बड़े भाई कर्मचन्द नाचने लगे. नाचते-नाचते अचानक उनके छाती में दर्द होने लगा। तुरंत सभी जनो ने वैद्य को बुलवाया। वैद्य के दवा देने पर भी बिलकुल फायदा न हुआ। कर्मचन्द की माताजी फूट फूट कर रोने लगी, साईंजी भी अपने बड़े भाई के समीप रोने लगे, साईंजी जब जल से भरी हुई कटोरी लेकर पौउड़ी पढ़ने लगे तभी उन्हें उस कटोरी में साईं वसण शाह का दीदार हुआ। वसण शाहजी ने कहा धर्म मैं तुम्हारे भाई कर्मचंद को इस लोक से दूर अपने साथ लेकर जाता हूँ। इतना कह कर

वसण शाह विलुप्त हो गए, उधर कर्मचंद ने अपने प्राण त्याग दीये यह बात देख साईंजी के मन में एक बात खटकने लगी, मैं अपना जीवन सार्थक करना चाहता हूँ। यह देखकर साईंजी का धंधे व संसार से जी भर गया था। पुरी रात विचार कर साईंजी ने यह निर्णय कीया अब संसार दुनियादारी से परे रहकर बाकी की जिंदगी प्रभु परमेश्वर की आराधना में व्यतीत करनी चाहिए। सुबह होते ही साईंजी सर्वप्रथम सेठ बसंतराम के पास आ पहुंचे उन्हें दुकान की चाबीयां सौंप कर यह कहकर चले अभी बैठ कर यह धन्दा संभालीये. मैं तो सच्ची कमाई करने चल रहा हूँ। साईंजी शहर से बाहर आकर एक विशाल घने जंगल में आकर डेरा लगाया। यह बात सुनकर साईं की माताजी के मानो प्राण शरीर से निकल गए हो। रोते हुए माताजी कहने लगी एक दु:ख अभी तक खत्म नहीं हुआ। दुसरा सर के ऊपर पहले ही इंतजार में खड़ा है। माताजी ने जंगल में जाकर साईंजी को ढूंढ लीया। कहने लगी बेटे धर्मू मेरे से ठगी न कर चुप चाप वापस घर चल। तभी साईंजी ने मुस्कराते हुए फरमाया मेरा असली घर यह घना वन है। मैं यहाँ सची कमाई करने आया हूँ कृपया आप मेरे साधना में बाधा मत डालीए। माताजी वहाँ से तो उस समय शांत होकर चली तो गयी परंतू रोज साईं के लिए भोजन व पानी अपने घर से लाया करती थी। देखते देखते सवा साल गुजर गया। उस घने जंगल में पीरों, फकीरों अलमस्तो को साईं धर्मदासजी से मोहबत हो गई थी। वे सैदव जंगल में साईं के दीदार के लिए आया करते थे, साथ में अन्य प्रेमी कपड़े अन्य वस्तूऐं व दक्षिणा आने लगी थी परंतू सारी चीजें जरूरतमंदो में बांटी जाती थी, जब साईंजी गुरू को याद करते थे गुरू स्वयं वहाँ पर पहुंच जाते थे। माताजी भी हमेशा की तरह भोजन लाने के साथ सेवा कीया करती थीं। एक दिन माताजी ने



रोते हुए साईंजी से कहा बेटा धर्म और कभी तक मुझे ऐसे तड़पाओगे चलो बेटा मान लो घर पर चलो साईंजी जोर-जोर से ठहाके लगाकर अपने माताजी के चरणों में गिरकर यह कहने लगे माताजी मैं तो अभी गुरूदेव की शरण में आया हूँ।

संबत १९४७ में लालाराम जी के आस्थान पर मेला लगा हुआ। जहाँ पर साईं वसण शाह भी पधारे हुए थे। उस सभी में कई जान वान, विदवान, गीतकार, फनकार आए हुए थे। साईं धर्मदासजी को भी उस दरबार में बुलवाया गया था, वहाँ पर साईंजी की माताजी ने साईं वसण शाहजी से गुहार लगाई की मुझ गरीब पर दया कीजिए पहले ही आपने मुझसे मेरा बडा बेटा छीन लीया है। मेरे पास अभी एक ही पुत्र धर्मदास बचा है, कृपया आप उसे समझाये वह शादी कर गृहस्थ जीवन अख्तयार करे। अगर यह शादी नहीं करेगा तो हमारा वंश आगे कैसे बड़ेगा साईं? साईं वसण शाह थोड़ी देर चुप हो गए कुछ समय बाद अपनी त्रिकाल दृष्टी से देखकर माताजी से कहा धर्मू को गृहस्थी से कोई औलाद उत्पन नहीं होगी. उलटा अगर तुम इसकी शादी करवाओगी तो तुम्हारे पुत्र की आयु तुम्हारी पुत्रवधू खा जाएगी तो यह परलोक में जाकर तुम्हारे बड़े पुत्र कर्मचंद से मिलेगा, यह सुन माताजी एक दम से चुप हो गयी व साईं वसण शाहजी से कहने लगी कि मुझे मेरा पुत्र चाहिए, मैं धर्मू की शादी नहीं करवाऊँगी परंतू



साईं मुझे वंश आगे बड़ाने के लिए एक पोते की जरूरत है। ये कैसी दुविधा है मैं अपने पुत्र की शादी नहीं करवा सकती अगर नहीं करवाती हूँ तो वंश आगे नहीं बढ़ेगा. आप तो करूणा के सागर हैं मैंने सुना है आपके दरबार से आज तक कोई सवाली खाली नहीं गया. आप कृपया करके कोई रास्ता बताईये। तभी संगत में एक भक्त बैठा हुआ था, उसका नाम साधुराम था। साईं वसण शाहजी ने साधुराम को मंच पर बुलाकर साधुराम से पुछा तुम्हें कितने सुपुत्र व कितनी सुपुत्रीयाँ हैं, साधुराम ने हाथ जाड़कर साईं वसण शाहजी से कहा मुझे वारी वारी से सन्तान होती है एक वर्ष पुत्र और एक वर्ष सुपुत्री परंतु साईं इस वर्ष पुत्री की वारी है. साईं वसण शाह त्रिकाल ज्ञानी संत थे। साईंजी ने साधुराम को आर्शीवाद देते हुए कहा इस वर्ष तुम्हें पुत्र जन्मेगा वह पुत्र तुम धर्मदास को गोद कर देना।

कुछ माहों पश्चात सन १९८९ के फरवरी माह में साधुराम के घर एक अदबुध्द सुंदर बालक ने जन्म लीया। साधुराम ने वचन अनुसार उस बालक को साईं धर्मदासजी की माताजी को सौंप कर अपना वचन पुरा कीया। माताजी ने उस बालक का नाम अटल रखा। वह बालक बडा होने तक दरबार में रहने लगा। जो साईं धर्मदासजी की सेवा करते साईं से शिक्षा गृहण करते करते अटल से साईं अटलराम बन गए। साईं धर्मदासजी के पश्चात साईं अटलराम जी को गादी पर विराजमान करवाया गया। साईं धर्मदासजी ने सिंध के प्रत्येक गांव, जिल्हे व शहर में अपने अनमोल प्रवचनों की वर्खा करते रहे। कितने प्रेमीयों भक्तों व अन्यों का भला करते रहे। सन १९१९ में धर्म दर्शन दरबार की स्थापना व साईं धर्मदासजी के नाम पर ही मंडलीयों की स्थापना की गई. जिनका लाभ लोखों भक्तों ने उठाया देश विभाजन के पश्चात भी भारत में पुन: भारत के कई शहरों में साईंजी के नाम पर दरबारें व मंडलीयाँ बनाई गई. साईंजी के द्वारा कीये गए सामाजिक कार्य आज भी दरबारों व मंडलीयों द्वारा परीपुर्ण कीये जाते हैं। उल्हासनगर में स्थीत साईं धर्मदास दरबार विश्व प्रसिद्ध है।

**जय धर्म सरकार....**

**जहाँ से जागो वहीं से सवेरा।**
**फिर तुझको क्यों है विकारों ने गेरा।।**
**सदा रखो दिल में प्रेम का बसेरा।**
**त्याग व प्रेम सीखो उस प्रभू से।।**
**ज़िसने किया कैलाश पर्वत पर बसेरा।**

**संसार में कुछ नहीं है राम के अलावा।**
**कुछ न काम आए राम के आलावा।।**
**मौत तो एक दिन सबको आनी है।**
**इसलिए एसे कर्म कर संसार में।।**
**मौत भी तुझे दे प्यार से बुलावा।**

**प्रभु को सच्चे मन से पुकार।**
**प्रार्थना सुन प्रभु पधारें तेरे दवार।।**
**जीवन में कभी भी न मानना हार।**
**इसलिए जीवन तरंग आध्यातमिक पुस्तक पर बार-बार।।**
**इस पुस्तक पर अमल कर जीवन में लाना सदाबहार।**

......हरि ॐ.....

**Avinash R. Valecha**
**9324149899**

# व्यक्तिव ऑफ द मन्थ "श्री. सुरेश ( पप्पु ) कालानी"



पप्पु शेर आहे.. पप्पु शेर आहे.. उल्हासनगर की धरती पर कदम रखते ही यह गीत कहीं ना कहीं आपको सुनने मिल जाएगा साथ ही इस गीत पर नाचते-गाते लोग भी। जी हाँ हम बात कर रहे हैं पूर्व आमदार श्री सुरेश पप्पु कालानी की जिन्होंने उल्हासनगर शहर में अपनी अलग ही पहचान बनाई है। पिता श्री बुधरमलजी एवंम मांता श्रीमती पम्मीबाई के घर जन्मे सुरेश पप्पु कालानी अपने आप में एक ऐसी शखिसयत हैं जिन पर पूरे उल्हासनगर शहर को गर्व है। बचपन से ही शहर के लिए दिल धड़कता था उनका, लोगों की मदद करने का स्वभाव उन्हें राजनीति में ले आया। जबकि वे एक सफल उद्योगपती रहे हैं, राजनीति में भी समाज सेवा ही की है। धर्मपत्नी ज्योतीजी भी कंधे से कंधा मिलाकर साथ देने वाली मिली हैं। सिंधी संप्रदाय की पीड़ा भली भांती जानते हैं पप्पु कालानी। सम्पूर्ण सिंधी संप्रदाय को एक सूत्र में पिरोने का काम किया है। उल्हासनगर शहर की हर दुख तकलीफ की घड़ी में साथ दिया है पप्पु कालानी ने। औद्योगिक नगरी है उल्हासनगर... संतों की भूमी है उल्हासनगर... यही दो बातें अपने आप में इस शहर को बाकी शहरों से अलग ले जाती हैं। इन्हीं बातों को समझते हुए, संपूर्ण सिंधी संप्रदाय के हितों को ध्यान में रखते हुए उल्हासनगर शहर को विश्व के धरातल पर पहचान दिलाई है श्री सुरेश पप्पु कालानी ने। एक आम सिंधी संप्रदाय का शख्स आज उल्हासनगर शहर में सिर उठाकर रह सकता है, व्यापार कर सकता है, अपनी कड़ी मेहनत से जिंदगी में खुशियों के रंग भर सकता है क्योंकि उसके आज को संवारने के लिए सुरेश पप्पु कालानी ने अपनी जिंदगी में बहुत कुछ योगदान दिया है, जिसे शहरवासी कभी भुला नहीं सकते। अदम्य इच्छाशक्ती और बेहतरीन समाज सेवा का दूसरा नाम है पप्पु कालानी। सभी को साथ लेकर चलने का नाम है पप्पु कालानी। उल्हासनगर में कई विश्व स्तरीय कार्य कर शहर को आगे बढ़ाया है। उद्योग की निरंतर उन्नती करने वाले शख्स हैं पप्पु कालानी। शिक्षा, व्यापार, उद्योग संपूर्ण सिंधी संप्रदाय की उन्नती-प्रगती का बीज बोने वाले शख्स हैं पप्पु कालानी। बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक में लोकप्रिय हैं पप्पु कालानी। मंद मुस्कान और सीधी बातों से किसी का भी मन मोहित कर लेते हैं। स्वभाव से मिलनसार और शहर का हित सोचने वाले व्यक्तिव हैं श्री पप्पु कालानी। आज उल्हासनगर शहर विश्व धरातल पर बहुत आगे बढ़ चुका है। लेकिन इस प्रगती पथ को अपने हाथों से बनाने वाले शख्स हैं पप्पु कालानी। वो लोगों के हैं और लोग उनके। तभी तो उल्हासनगर में हर त्योहार हर उत्सव पर लोग नाच उठते हैं गा उठते हैं- जिये जिये जिये जिये... पप्पु कालानी... और लोगों के हृदयस्थल पर विराजमान पप्पु कालानी बहुत ही विनम्रता से मुस्कुरा उठते हैं। वो इस शहर के प्रति अपनी जिम्मेदारियां जानते हैं और निरंतर कार्य कर रहे हैं। उनकी इस अथक परिश्रम और महान यात्रा के लिए **"माता रुकमणी देवी सामाजिक संस्था"** (रजि.) और मासिक पत्रीका **"जीवन तरंग"** परिवार की ओर से श्री सुरेश पप्पु कालानी जी को हार्दिक-हार्दिक शुभ कामनाएं।

# चालिहा साहिब



सिंधी समुदाय के अष्ट देव भगवान झुलेलाल की याद में चालिहा साहिब मनाया जाता है। चालिहा अर्थात चालीस दिनों का महाव्रत सिंधी समाज में करीबन लाखों लोग इस महाव्रत को रख अपनी सारी मनोकामनाएँ पुर्ण करते हैं। चालीस दिनों का महाव्रत रख न सिर्फ लोग अपने अष्टदेव झुलेलाल जी की पुजा आराधना करते हैं बल्कि चालीस दिन कांदा, लसून, मांसाहारी भोजन का सेवन न कर अपने लौकिक जीवन से परे रहकर अध्यातमिक जीवन बसर कर अपने जीवन को सार्थक करते हैं वे मनुष्य सच में भाग्यशाली हैं जिन्हें चालिहा साहिब रखने का अवसर मिलता है। वैसे तो चालिहा साहिब का तातविक अर्थ यही है कि चालीस दिन सादा जीवन जीना व ब्रहमर्चय का पालन करना।

इस महाव्रत की शुरूवात सिंध से अब के पाकिस्तान से हुई परंतू भारत आने के पश्चात भी सिंधी समुदाय ने अपनी पारमपरिकता को बरकरार रखा। उल्हासनगर में १ नंबर कॅम्प, ५ नंबर कॅम्प में झुलेलाल मंदिर का निर्माण नये सिरे से कर महाव्रत रखना चालू कीया। चालिहा साहिब के व्रतों में न सिर्फ उल्हासनगर में बल्कि जहां जहां सिंधी समुदाय के लोग बस गए वहां वहां धूम धाम से चालिहा साहिब मनाया जाता है। उल्हासनगर-१ स्थित भाऊ परसराम झुलेलाल मंदिर में ४० दिनों के महाव्रतों की शुरूवात इस वर्ष दिः १६/७/२०११ को हुई, १ दिन पर हजारों की संख्या में लोगों ने ४० दिनों का व्रत रखा यहां पर ४० दिन सुबह और शाम को भगवान झुलेलाल की महा आरती की जाती है, शाम को गीत, संगीत व पारमपारिक कार्यक्रम कीये जाते हैं। कई महान संतों द्वारा अनमोल प्रवचनों की वर्खा कर सभी भक्तों को सुखी जीवन व सदा खुश रहने की, प्रभू भगवान के प्रति अटल श्रृद्धा जैसे महत्वपूर्ण ज्ञान के मोतियों को बांटा जाता है। तत्पशचात सभी भक्तों की मनोकामनाएँ पूर्ण होने की प्रार्थना भगवान झुलेलाल से की जाती है व सभी भक्तों को प्रेम पूर्वक भोजन (प्रसाद) करवाया जाता है। ४० दिन इस प्रकार रोज झुलेलाल मंदिर में इसी प्रकार मौज मचाई जाती है। इस कार्यक्रम में शहर की कई गणमानीय हसतीयाँ व महान संत, गीतकार, फनकार, कलाकार, दूर-दूर से कई भक्त भगवान झुलेलाल का दर्शन करने आते हैं।

वहीं दूसरी और उल्हासनगर-५ स्थित चालिहा साहिब मंदिर में भी महाव्रतों का आयोजन (दिः २६/७/२०११) को शुरू हो गया। यहाँ पर भी हजारों की संख्या में भक्तों ने चालीस ४० दिनों के महाव्रतों को रख अपने जीवन को सार्थक बना दिया। चालिहा साहिब मंदिर में हर रोज हजारों की संख्या में भक्तों का तांता लगा रहता है। इस मंदिर की विशेष बात यह है कि स्वंय झुलेलाल भगवान ने एक भक्त के स्वपन में आकर दर्शन दे कहा कि चालिहा कार्यक्रम के अलावा भी रोज भंगरा करवाओ यहां कभी भी अनाज की कमी नहीं रहेगी दिन रात चालिहा साहिब मंदिर में मौज लगी रहती है। रात ८ से १२ बजे तक गायक गुरमुख भाई व अन्यों द्वारा मधुर भजन, गीत सुन भक्त मंत्र मुग्ध हो जाते हैं। सेवाधारी जिम्मेदारी से अपनी सेवा कर रहे हैं। श्री बच्चाराम रूपचंदानी व सुनिल दुसेजा ग्रुप ने भी चालिहा मंदिर में मौज मचाने के साथ मंदिर की कड़ी निगरानी कर अपनी सेवा बखूभी तौर निभाई है। मंदिर में सजावट (डेकोरेशन) तारीफे काबिल थी। शहर की कई गणमानीय शखसीयतों ने कार्यक्रम में उपस्थिती दे अपने जीवन को भड़भागी बनाया। भगवान झुलेलाल की कृपा से हर साल चालिहा व्रत सुख शांती, धूम धाम से मनाया जाता है।

जय सिंध, जय झुलेलाल

आयो लाल कयो झुलेलाल, बेड़ा ही पार....

# ---: आपके पत्र :---



**श्री दीपक रोहरा जी**
**धन्यवाद**

आपका सामाजिक मासिक पत्रीका अप्रेल २०११ का मिला, जो माता रुकमणी देवी सामाजिक संस्था के द्वारा प्रकाशित किया गया है। मैंने लगभग पूरे पुस्तक पर नजर डाली, जैसा (जीवन तरंग) आपने नाम रखा है वैसे ही कुछ अनमोल तरंगे मुझे पुस्तक में दिखाई दी, संत महात्मा तथा गुणी लोगों के चित्र आपने प्रकाशित किये हैं, भले ही आपकी पत्रीका हिन्दी में प्रकाशित है पर इस में सिंध की सिंधीयत की सुगंध नजॅर दिखाई दी। कुछ आपने जीवन से लागू शरीर के तन्दुरस्त रहने के लिए उपाय भी दर्शाए हैं धन्यवाद मेरे साईं झुलण करें कि आपकी सेहत सलामत रहे और चले आप हरदम एक कदम और आगे... और आगे... और आगे।

**आपका शुभचिंतक**
**गीतकार गोविंदा**

# ---: आपके पत्र :---



**मान्यवर श्री दीपक रोहड़ा जी,**
**सप्रेम नमस्ते,**

ब्रहमलीन माता रुक्मणीदेवी की याद में प्रकाशित सामाजिक मासिक पत्रीका जीवन तरंग के चार अंक १-२, ५-६ प्राप्त हैं, धन्यवाद। पत्रीका अच्छी, शांदार है, देखते ही उमंग व भावनाएं जागृत हो जाती हैं। पत्रीका द्वारा पौराणिक कहानियों में प्रत्येक ज्योतिर्लिंग की अच्छी जानकारी प्राप्त हुई। त्यौहारों व उत्सवों की चित्रों सहित घर बैठे पूर्ण समाचार प्राप्त हुआ। ज्ञान की बातें चैपटर भी पढने लायक अच्छा लगा। स्वास्थय के नुसखे भी उपयोगी हैं। हमारा शहर में संतो महात्माओं से अवगत किया है, अच्छा लगा। संक्षेय में कहूंगा किं इतने सारे चित्रां सहित घर बैठे पूरा आनंद प्राप्त हुआ। आपने याद किया उसके लिये आभारी हूँ। हार्दिक शुभकामनाएं प्रस्तुत कर रहा हूँ व पत्रीका के अवल भविष्य की शुभकामनाएं रखता हूँ कि पत्रीका अपने उदेश्य में पूर्ण सफलता प्राप्त करे।

इन्हीं शुभ भावनाओं से-
**इसरसिंह बेदी, अजमेर**

# कोनार्क फाऊंडेशन द्वारा किया गया साराहनीय कार्य



कोनार्क फाऊंडेशन की तरफ से एक ऐसा महान कार्य किया गया है। जो मानव जाती के लिए एक मिसाल है। दु:ख और सुख कभी बोल कर नहीं आते। किसे पता था कि २४ जुलाई २००९ के दिन गुडमैन कॉटेज नाम इमारत जो उल्हासनगर के कॅम्प नं.१ में स्थित थी। वह अचानक गिर जाएगी यह दिन इस इमारत में रहने वाले लोगों के लिए दु:ख भरा साबित हुआ क्योंकि दुर्भागयवष गुडमैन कॉटेज इमारत गिर कर निस्तोनाबूत हो गई।

इस दुर्घटना में कई लोगों के जानमाल का नुकसान हुआ सबसे दुखदायक बात यह रही कि गुडमैन कॉटेज के रहवासीयों का आशियाना टूट गया और वे दर-बदर हो गए। इस इमारत में १४ फ्लैट व नीचे ४ दुकान थे। तभी कोनार्क फाऊंडेशन ने गुडमैन रहवासीयों को आश्वासन देते हुए कहा था कि हिमत न हारीये गुडमैन इमारत का पुर्न निर्माण होगा। कोनार्क फाऊंडेशन ने एकजुट होकर इमारत का पुर्न निर्माण करना शुरू कर दीया। पूरे दो साल बाद २४/७/२०११ को इमारत का काम पूर्ण हुआ। अपने आश्वासन को उन्होंने बखूभी निभाया व पूरे दो साल बाद २४/७/२०११ से पहले इमारत का निर्माण पूरा कर लीया। पैसा तो हर कोई कमाता है परंतू पैसों का सही जगह पर उपयोग करने की समझ बहुत ही कम लोगों में होती है। कोनार्क फाऊंडेशन व कोनार्क ग्रुप के श्री अन्नू मनवानी, श्री नंद जेठानी, श्री महेश अग्रवाल जी, श्री काई सेठ व सभी साथीयों द्वारा किया गया यह कार्य सच में सुनेहरे शब्दों में लिखने के काबिल है। कोर्नाक के द्वारा हुआ यह कार्य देख हम इसे लिखने बिना रह नहीं पाये। क्योंकि कोनार्क ने गुडमैन कॉटेज के निवासीयों के लिए नया आशियाना तैयार कर सच में गुडमैन व उल्हासनगर के अन्य नागरिकों की दुआ प्रप्त की है। काम कोनार्क फाऊंडेशन ने किया परंतू महुर्त-के दिन फ्लैट की चाबीयाँ उल्हासनगर के महान संतों के करकमलों द्वारा गुडमैन के निवासीयों को दिलाई व पूरा संतों श्रेय संतों को दिया। उनका मानना है कि संतों के असीम आर्शिवाद की वजह से हम यह कार्य करने में सक्षम हुए हैं। कोनार्क के द्वारा किये गए नेक कार्य को देख पूरे शहर ने उन्हें शुभकामनाएँ दी। **"माता रुकमणी देवी सामाजिक संस्था"** (रजि.) और मासिक पत्रिका **"जीवन तरंग"** परिवार भी उनके द्वारा हुए कार्य देख उन्हें शुभकामनाएँ देते हुए भगवान से यही प्रार्थना कर रही है कि कोनार्क ग्रुप द्वारा हमेशा नेक कार्य होते रहें।



# जीवन तरंग के सन्मानिय सदस्यों को जन्मदिन की बधाई तथा शुभकामनाएँ।

**श्री. हरदास माखीजा**
जन्मदिन : १० ऑगस्ट





**ॲड. बलराम पंजवानी**
जन्मदिन : १० ऑगस्ट

**श्री. नरेंद्र कुमार ठकर (कुमारी)**
जन्मदिन : १९ ऑगस्ट





**श्री. रतनलाल कुंदनानी**
जन्मदिन : २ ऑगस्ट

**कुमार सूरज ताराचंद लुंड**
जन्मदिन : २० ऑगस्ट





**श्री. मनीश साधूराम टेकचंदानी**
जन्मदिन : २० ऑगस्ट

**श्री. बबन गणपत गायकङ**
जन्मदिन : २२ ऑगस्ट

**श्री. मदन रामचंदानी**
जन्मदिन : १० ऑगस्ट

# ।। श्रध्दांजली ।।

माता रुकमणी देवी सामाजिक संस्था (रिज.) व मासिक पत्रिका जीवन तरंग परिवार की ओर से इन पुण्य आत्माओं को श्रध्दांजली अर्पित करते हैं।



स्व.श्री. मोहनदास दावानी
भगवत धाम वास
दिनांक: २४/०७/२०११



स्व.श्रीमती.सुनीता एन. दुसेजा
भगवत धाम वास
दिनांक: १६/०७/२०११



स्व.श्रीमती.चांदनी (सीमा) सेवकराम आहुजा
भगवत धाम वास
दिनांक: ११/०७/२०११



स्व.श्री. राम नेभनदास वाधवा
जन्म दिनांक: २०/०१/१९५२
भगवत धाम वास
दिनांक: २९/०७/२०१९

## प्रथम स्मरणांजली

सर्वगीय श्री. राम नेभनदास वाधवा (हमारे मामाजी) की पहली पुण्य तिथी तारीख २९/०७/२०११ को उनके निवास स्थिल रामायण नगर बंगला नं.२, उल्हासनगर-३ में बहन बेटीयों व भांजीयों (कन्याओं) को बुलाकर सुखमनी साहेब का पाठ करवाया गया व उन्हें प्रसाद, दक्षिणा देकर आशीष लेकर सच्ची श्रदांजली दी गई।

**सेवा में: भारती, जीतू, दीपा, लत्ता धीरज कुमार, श्यामलाल, परमानंद, मनीश, हितेश, दादा मेंघराजमल, दीपक रोहरा, नरेश रोहरा राजू वाधवा**

*With Best Compliments From :*

SINDHI KACHCHHI TELEVISION

SSS

Sponsored by :



# Jaisu Dredging & Shipping Ltd.

"Kewalramani House"
Dinshaw Building Road,
Near Custom House,
Kandla Port (Gujarat) India

PHONE : +91 2836 270428 / 270538 / 270128
RESI : 260235 / 260224 / 260295
FAX : +91 2836 270556 / 270650 / 260389
TELEX: 105 332 KEWL IN & 105 233 KEWL IN


ॐ नमः शिवाय
ब्रह्मलीन माता रूकमणी देवी
पहरीं सब जो भलो, तहिं सदिके असाँ जो भलो....